मंत्र-तंत्र-यंत्र
विज्ञान
अप्रैल-९२

महापंचक के दो विशेष प्रयोग

(२५-५-६२ से २८-५-६२ तक)

भारतीय शास्त्रों के अनुसार जब पंचक योग आता है, तो सात्विक साधनाएं, शुभ कार्य, विशेष यात्रा इत्यादि वर्जित मानी गयी हैं। विवाह, गृह प्रवेश, गृह निर्माण, नामकरण संस्कार, यज्ञोपवीत इत्यादि कार्य वर्जित माने गये हैं।

एक कहावत है कि- **"दुष्ट को दुष्टता से ही साधा जा सकता है, न कि उसके सामने हाथ जोड़ कर"**, इसी प्रकार पंचक काल में यदि तीव्र, क्रूर तत्वों की साधना की जाय तो वह निश्चय ही प्रभावकारी सिद्ध होती है। अतः शत्रु बाधा शान्ति हेतु भूत-प्रेत-पिशाच साधना यदि इस समय की जाय तो वह विशेष फल देते हुए तत्काल साधक को अपना प्रभाव देती है।

इसका एक विशेष कारण यह है कि इन पंचक दिवसों में अनिष्टकारक तत्व विशेष प्रभावशाली रहते हैं, और ये अनिष्टकारक तत्व जो कि भूत-प्रेत-पिशाच, दुष्ट ग्रह तथा अन्य रूप में विद्यमान रहते हैं, शुभ कार्यों पर अपना प्रभाव डाल सकते हैं। क्योंकि अनिष्ट तत्व का कार्य तो अनिष्ट स्थिति उत्पन्न करना ही है, लेकिन इस पक्ष का एक विशेष पहलू भी है।

इस वर्ष मई में पंचक योग दिनांक २४ मई से प्रारम्भ हो रहे हैं और २८ मई तक हैं, साथ ही भद्रा योग भी बना है, अतः इस योग के कारण साधक को तांत्रिक प्रयोग अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए।

नृसिंह साधना प्रयोग

महापंचक का प्रथम दिन कालाष्टमी है, अतः प्रथम प्रयोग नृसिंह साधना से सम्बन्धित करना चाहिए, इस दिवस को सायंकाल में किया जाने वाला यह प्रयोग काम्य प्रयोग है और साधक को अपनी किसी विशेष बाधा की पूर्ण समाप्ति हेतु यह प्रयोग करना है।

अपने सामने ताम्र पत्र पर अंकित मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"नृसिंह यन्त्र"** तथा उसके चारों ओर एक गोल घेरे में **"२१ गोमती चक्र"** तथा २१ सुपारी रखें, इन सब पर सिन्दूर अर्पित करें तथा अपने सामने एक तेल का दीपक जला कर वीर मुद्रा में बैठ कर निम्न मन्त्र की पांच माला जप अवश्य करें।

जब तक यह मन्त्र जप पूर्ण न हो जाय तब तक उस स्थान से उठना नहीं है, साधक का आसन लाल रंग का होना चाहिए तथा साधक के वस्त्र भी लाल रंग के हों।

मन्त्र

ॐ नमो भगवते नरसिंहाय नमस्तेजस्तेजसे आविराविर्भववज्रनखवज्रदंष्ट्रकर्माशयान रन्धय रन्धय तमो ग्रसग्रस स्वाहा अभयमात्मनिभूयिष्ठा ॐ क्ष्रौं।

बीज मन्त्र

"क्ष्रौं"

वर्ष–१२

अंक–४

अप्रैल-१९९२

: सम्पर्क :

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

डॉ० श्रीमाली मार्ग,

हाईकोर्ट कालोनी,

जोधपुर–३४२००१ (राज०)

टेलीफोन : ३२२०९

आनो भद्राः क्रतयो यन्तु विश्वतः

मानव जीवन की सर्वतोमुखी उन्नति प्रगति और भारतीय गूढ़ विद्याओं से समन्वित मासिक

मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान

प्रार्थना

नित्यं शुद्धं निराभासं निराकारं निर्जनम् ।
नित्यबोधं चिदानन्दं गुरुं ब्रह्म नमाम्यहम् ।।

नित्य, शुभ्र, निराभास, निराकार, निर्मल, नित्यबोध स्वरूप चिदानन्दमय ब्रह्म गुरु को मैं नमस्कार करता हूं ।

बोये हैं बीज आनन्द के

स्वप्न सौंपता हूं तुम्हें

ये बयार ये फल ये मधुरता तुम्हारे लिए

हर व्यक्ति ने अपने लिए आनन्द की एक परिभाषा ढुंढ़ ली है, उसका आनन्द उसे जो सिखाया गया है उस पर आधारित है, पीढ़ी दर पीढ़ी सिखाया गया है कि आनन्द एक अच्छे घर में रहने से है, स्वादिष्ट खाद्य पदार्थों के सेवन से है, सुन्दर शैया और सुन्दर पत्नी में आनन्द है, बच्चे हों, दूसरे लोग आपको देख कर झुकें, इसी में आनन्द है, यह परिभाषा आपने स्वयं नहीं बनाई है, यह आपको सिखाया गया है, और सिखाने वाले जानते थे कि जब तक इस घेरे में ही व्यक्ति सोचेगा कि यही आनन्द है, तो फिर सभी चक्र बराबर चलते रहेंगे, गृहस्थ बना व्यक्ति एक धुरी पर चक्कर लगाता रहेगा, न तो वह उथल-पुथल में विश्वास करेगा, क्योंकि उसे बचपन से वर्ण माला की तरह यही सिखाया गया है ।

एक जगह जोरदार सभा हुई, बड़े-बड़े ओजस्वी भाषण हुए, और निर्णय लिया गया कि कल जोरदार जुलूस निकालना है, पुलिस चाहे गोली चलाये, तो भी पीछे नहीं हटना है । दूसरे दिन जुलूस में, सभा में जितने लोग आये थे उससे चौथाई लोग भी नहीं आये, मैंने पूछा भाई कल तो बड़ा जोश खा रहे थे, आज घर में क्यों बैठे हो, तो बोला कि मैं बाल-बच्चेदार आदमी हूं, कल को कुछ हो जाय तो इनका क्या होगा अर्थात् बाल-बच्चेदार होना अपने आपको एक घेरे में बांध कर आत्मकेन्द्रित होना हो गया, कहीं झगड़ा होता है तो गृहस्थ आदमी कहता है, कि मैं इस फसाद से दूर रहूंगा, चाहे कितना ही अन्याय क्यों न हो रहा हो, मैं तो बाल-बच्चेदार आदमी हूं मैं दूर ही रहूंगा, मेरे मन में तो बहुत जोश है, लेकिन क्या करूं ?

आखिर आनन्द भाव क्या हैं ?

आनन्द एक सापेक्ष भाव है, जिस कार्य को करने से मन में एक प्रसन्नता का अनुभव हो, वह आनन्द भाव है न कि दूसरों के सराहने पर, आपकी प्रशंसा करने पर जो

(परम पूज्य गुरुदेव)

भाव उत्पन्न हो वह आनन्द है। बहुत मन करता है कि बरसात में कपड़े खोल कर नहाया जाय, लेकिन फिर सोचते हो कि लोग क्या कहेंगे, बस चुपचाप बैठे बरसात को ताकते रहते हो, जो भाव उत्पन्न हुआ उसी की हत्या कर देते हो, रोज मन के आनन्द भाव की हत्या करते हो और फिर बाहर आनन्द को ढूंढ़ने जाते हो।

मेरे पास नित्य प्रति बहुत से पत्र आते हैं, कि गुरुदेव आप सिद्धाश्रम मत जाइये, अभी हमें आपकी बहुत जरूरत हैं, मैंने कहा ठीक है भाई अभी मैं रुक जाता हूं, लेकिन जब मैं जाऊंगा तो क्या तुम मेरे साथ चलोगे ? और यदि तुम्हें साथ चलना है तो यह साथ चलने की प्रक्रिया अभी से प्रारम्भ कर देनी पड़ेगी, तुम्हें अपना सब कुछ त्यागना पड़ेगा, तो वह शिष्य बोला कि गुरुदेव ! बस एक मकान बन जाय, फिर मैं निश्चिन्त हो जाऊं, कोई कहता है कि बच्ची की शादी हो जाय फिर सब चिन्ता से मुक्ति मिल जाय, फिर आप कहीं भी ले जाओ, अभी तो मुझे संसार में यह काम निपटाने हैं। अरे ! कठपुतली की तरह जीवन जी रहे हो, और दुस्साहस करते हो मेरे साथ चलने का।

मेरे साथ चलना है तो जीवन में तुम्हें अपना दृष्टि-कोण बदलना पड़ेगा, जो विचार तुम्हारे भीतर भरे हुए हैं, उन सब को निकाल कर एक शून्य की स्थिति उत्पन्न करनी होगी, तभी तो तुम आनन्द का अनुभव कर सकोगे, किसी भी यात्रा पर चलने के लिए तैयार हो सकोगे, और मैं भी विश्वास के साथ यह देख सकूंगा कि अब यह शिष्य तैयार है, अब यह शिष्य कायर नहीं हैं, अब यह शिष्य अपनी शक्ति को, अपने लक्ष्य को, अपने आनन्द को पहिचान गया है और इसे कार्य दिया जा सकता है, इसे विचार दिये जा सकते हैं, जो सीधे उसके हृदय में स्थान बनाएंगे न कि तर्क-वितर्क करते हुए मस्तिष्क में ही मांप-तोल करेंगे।

आनन्द का बीज बोना है—

मैं अपने पूरे जीवन में बांटता चला गया आनन्द के वे बीज, अपने शिष्य के बीच, बहुतों ने इसे परखने का प्रयास किया सोचा कि इससे हम सब प्राप्त कर लेंगे, और जो भौतिक इच्छाएं हैं वे पूरी हो जाएगी और इस तरह अपनी इच्छाओं का आकाश बढ़ाते चले गये, बहुत कम शिष्यों ने सोचा कि गुरुदेव ने जो आनन्द का यह बीज दिया है, इसे तो हृदय के भीतर उगाना है, जो अनुभूति दी है अपने पूरे शरीर में विस्तार कर पल-पल आनन्द अनुभव करना है न कि भटकना है इधर-उधर। गुदेरुव की आवाज के साथ अपने मन के आनन्द भाव को उनके विचारों के साथ समाहित कर देना है, और मेरे वे शिष्य बहुत बड़ी जिम्मेदारी लेते हुए भी आनन्द से सराबोर हैं, क्योंकि उनके कार्यों में निश्चलता है, एक समर्पण है, लेन-देन का कोई भाव नहीं है।

अभी देर नहीं हुई है, एक शुद्धता की, स्वच्छता की प्रक्रिया भीतर-भीतर प्रारम्भ करनी है, बहुत कूड़ा-करकट सामाजिक वर्जनाओं का, इच्छाओं का, महत्वाकांक्षाओं का भीतर-भीतर भर दिया है, तुम इसमें प्रेम के आनन्द के बीज बोना चाहते हो तो फिर कैसे प्रेम का वृक्ष अंकुरित हो सकता है ।

इसके लिए तो एक शून्य की स्थिति उत्पन्न करनी है और उसका प्रयास तुम्हें ही करना है, जब यह प्रयास प्रारम्भ कर दोगे तो अपने आप आगे का मार्ग खुलता रहेगा ।

सौंपता हूं तुम्हें अपने स्वप्न

मेरे शिष्यों ! मैं अपने अनुभवों का बोझ तुम्हें नहीं सौंपूंगा, तुम्हें अपनी पीड़ाओं की गठरी भी नहीं सौंपूंगा, मैं तुम लोगों को सौंपना चाहता हूं कि जो आनन्द तुम अनुभव कर सको, जो मेरी अनुभूति है वह अनुभूति भी तुम तक पहुंचे, वह अनुभूति तुम्हारे भीतर रच पच जाय और इस अनुभूति को किसी और को दे सको, मैं तुम्हें गृहस्थ छोड़ने की भी सलाह नहीं देता, मैं तो चाहता हूं कि तुम्हारा केवल दृष्टिकोण ही नहीं अपितु सारे विचार मन के भीतर आनन्द का उद्‌गम करने में प्रवाहित हो। बन्धन की जकड़न से तुम मुक्त होकर खुल कर हंस सको, एक आनन्द की मुस्कान तुम्हारे चेहरे पर थिरक उठे, जीवन को देख कर तुम प्रसन्न हो, सको जीवन का सार्थक भाव क्या है, इसका निर्णय तुम स्वयं कर सको और उसके अनुसार जीवन जी सको, तभी तो मेरी अनुभूतियों की सार्थकता है ।

मैं तुम्हें न तो वर्जनाओं से मुक्त और न वर्जनाओं से युक्त जीवन जीने की सलाह देता हूं, केवल इतनी ही सलाह है कि अपने आपमें परमात्मा के दिये हुए इस वरदान रूपी जीवन का एक-एक क्षण सार्थक हो, केवल ऐसे कार्यों में ही नहीं बीत जाय जिसकी केवल उपयोगिता है लेकिन पूर्ण आनन्द नहीं है ।

हमें कोई काफिला नहीं बनाना है, कोई कारवां नहीं बनाना है, न ही कोई लम्बी यात्रा पर जाना है, यात्रा तो अपने भीतर उत्पन्न करनी है, इस यात्रा में जिन क्षणों में तुम खो जाओ, विचार शून्य हो जाओ वही क्षण सार्थक क्षण हैं, और इस आनन्द को दूसरों के साथ बांटने के प्रयास में कुछ तर्क-वितर्क सुनने पड़ेंगे, कुछ निन्दा होगी, कुछ लोग पीड़ा भी देने का प्रयास करेंगे, लेकिन इससे घबराना मत, जब एक बार मस्तिष्क से नहीं अपने हृदय से अपनी आत्मा से निर्णय ले लिया है तो फिर इसी मार्ग पर मुस्कराहट के साथ, गाते हुए, हंसते हुए, प्रेम बांटते हुए, मीरा की भांति मगन होते हुए चलना है ।

अभी बहुत विस्तार होगा

जो कार्य हमने प्रारम्भ किया है, उसमें बहुत विस्तार होगा, बहुत लोग साथ आकर जुड़ेंगे, बहुत सारे लोगों की भटकन समाप्त होगी, ध्यान केन्द्र तथा योग केन्द्र स्थापित होंगे, अहोभाव की प्रक्रियाएं साथ-साथ बैठ कर सम्पन्न होंगी, और ध्यान रहे कि यह क्रिया प्रारम्भ हो गई है, इसमें सब मिल कर कार्य कर रहे हैं, हर कोई अपनी जिम्मेदारी समझते तो हैं, लेकिन इस जिम्मेदारी को समझ कर पूर्ण समर्पण भाव से कार्य करने को तत्पर शिष्य निश्चय ही कम हैं।

आज मैं संदेश देता हूं कि अपने भीतर झांक कर एक आत्म विश्लेषण की प्रक्रिया प्रारम्भ कर अपने आपको मस्तिष्क के आइने में नहीं अपने हृदय के आनन्द भरे दर्पण में देखकर मेरे हृदय से लगने के लिए आ जाओ। ●

अब सौंप दिया सब भार तुम्हारे चरणों में

गुरु चरण कमलेभ्यो नमः

गुरु चरणों का ध्यान एवं नित्य प्रति गुरु पूजन ही तो शिष्य का जीवन है, यह पूजा समर्पण साधना है, जिसमें साधक अपने समस्त राग-द्वेष, पीड़ा अपने आंसुओं के माध्यम से कण्ठ से गुरु पुकार करते हुए समर्पित कर देता है, सौंप देता है, अपना समस्त जीवन।

गुरु महिमा का वर्णन केवल वेद पुराण उपनिषद इत्यादि शास्त्रों में ही नहीं है अपितु जन-जन में एक निश्चित आधार के रूप में विख्यात है, महान सदगुरुओं ने अपने स्वयं की प्रशंसा में कुछ नहीं लिखा, उन्होंने परम ब्रह्म को आधार माना अपने विचारों को कभी थोपने का प्रयास नहीं किया, उनका चिन्तन केवल सामाजिक चेतना को जागृत कर पूरे समाज के स्तर को सुधारना था, गुरु चाहे वशिष्ठ हों, याज्ञवल्क्य हों, गोरखनाथ हों अथवा रामतीर्थ या विवेकानन्द केवल एक ही प्रयास रहा कि सामाजिक अन्धकार को दूर कर शिष्यों के जीवन में ज्ञान की लौ जलाई जाए, उनके लिए शिष्य की कोई श्रेणी नहीं थी, जो भी शिष्य भावना से युक्त होता था, अपने भीतर आत्म साक्षात्कार करना चाहता था, अपनी कुण्डलिनी जागरण करना चाहता था, अपने जीवन के वास्तविक स्वरूप को देखना चाहता था, उस प्रत्येक शिष्य को अपने हृदय से लगाया, अपने पुत्र से अधिक माना और उसके जीवन को आलोकित किया।

यदि सद्गुरुदेव सूर्य हैं तो शिष्य उनकी किरणें हैं, और जब ये किरणें, अपना प्रकाश फैलाती हैं, तो सब कुछ आलोकित हो जाता है, अन्धकार का नाश हो जाता है।

असत्य से सत्य की ओर

महान गुरुओं ने कभी भी अपनी शक्ति का दुरुपयोग नहीं किया और न ही अपनी शक्ति के चमत्कारिक प्रदर्शन किये, क्योंकि उन्हें ज्ञान था, कि यदि पूरे समाज का उत्थान करना है, समाज के सामने नया आदर्श देना है, शिष्य के जीवन से अज्ञान रूपी परत हटानी है तो उसे एक साधारण रूप में अपने पास बिठा कर अपने हाथ से ज्ञान का अमृत प्याला पिलाना पड़ेगा, उसे अपने साथ रख कर कुछ सिखाना पड़ेगा, अन्यथा प्रभाव केवल ऊपर-ऊपर ही रहेगा, और शिष्य वास्तविक अनुभूति प्राप्त नहीं कर सकेगा, इसके लिए उन्होंने सबसे पहले स्वयं शरीर की देह की क्षमता को मांपा, तपस्या के बल पर अपने आपको उस स्तर तक पहुंचाया कि वे जो भी बातें कहें वह एक ठोस आधार लिये हो, स्वयं की देखी-परखी, अनुभव की हुई हों, स्वयं के भीतर संशय की कोई गुंजाइश नहीं रहे, क्योंकि यदि स्वयं के भीतर ही संशय है तो जो वाणी उच्चारित होगी उसमें आधार नहीं होगा।

गुरु और वरदान

क्या आपने आज तक कहीं पढ़ा है कि गुरु ने कोई वरदान कोई भौतिक इच्छा मांगी हो, उन्होंने केवल ब्रह्मत्व प्राप्ति हेतु साधनाएं सम्पन्न कीं, और ब्रह्मत्व प्राप्ति से उनके भीतर वह तेज उत्पन्न हो गया कि यदि किसी ने उनसे कोई वर मांगा तो सद्गुरुदेव के श्रीमुख से उच्चरित हुआ **"तथास्तु"** अर्थात् जैसी तुम्हारी इच्छा है, वैसा ही कार्य पूर्ण हो, अब महत्वपूर्ण प्रश्न यह आता है, कि क्या वरदान मांगना शिष्य के लिए उचित है? यही शिष्य की भक्ति और उसकी क्षमता का प्रश्न उठ खड़ा होता है, सद्गुरुदेव सब कुछ देखते हुए भी शिष्य के मुंह से कहलाना चाहते हैं और जब शिष्य अपने भीतर के प्रश्नों के उत्तर अपनी इच्छाओं के उत्तर अपने आप गुरु भक्ति से समाधान कर लेता है, वही शिष्य अपने जीवन में सद्गुरुदेव के निकट पहुंच जाता है, इसीलिए शास्त्रों में गुरुदेव के लिए निवेदन है—

॥ ॐ ब्रह्म वै दिवो हः सः हिवो वै गुरु वै सदा हः ॥

हे गुरुदेव! आप ब्रह्म स्वरूप हैं, सूर्य स्वरूप हैं, विष्णु स्वरूप हैं, आप मुझे आत्मवत् बना लें, यही प्रार्थना है।

आत्मवत् बनने की शिष्य की भावना असत्य से सत्य की खोज के लिए बढ़ते हुए, सार तत्व को प्राप्त करना है, जिसे गुरु ही सरलता से सूर्य के सदृश तेज पुंज बन कर शिष्य को जाग्रत कर देते हैं।

तमसो मा ज्योतिर्गमय

जैसे ही शिष्य के अन्तर में गुरु उपरोक्त क्रिया सम्पन्न करता है, उसके जीवन में अज्ञान अन्धकार के बादल स्वतः छटते जाते हैं, एक नयी सिहरन नयी उमंग, नयी गति, नयी तरंग, जीवन में नाचने लगती है, उसे अहसास होने लगता है कि यही वह सब कुछ नहीं है, जिसे पाने के लिए

उसने अनमोल मानव रत्न यह देह रूपी मन्दिर प्राप्त किया है, इसमें स्थापित आत्मा और ब्रह्म का संयुक्त स्वरूप ही उसका अभीष्ट है. गुरु का "गु" अक्षर और "रु" अक्षर निश्चय ही अज्ञान से सत्य एवं अन्धकार से प्रकाश की ओर ले जाने की एक मधुर तांत्रोक्त क्रिया है, इसीलिए कहा गया है-

गुकारस्त्वदन्धकारश्च रुकारस्तेज उच्यते । ज्ञानाग्रासक ब्रह्म गुरुरेव न संशयः ।।

गुरु के पावन चरणों में मानव अपने संचित पुण्यों को ले कर जब दीक्षा का सौभाग्य प्राप्त करता है, तो गुरु का मिलन दिव्य वात्सल्य और ममतायुक्त पिता और माता का शिशु में आत्म मिलन जैसा मनोहारी दृश्य पैदा कर कर देता है, जब गुरु शिष्य को सीने से लगाकर उसे प्यार से दुलारते हुए '**बेटा**' का उच्चारण करते हैं, गुरु अपने हाथ के स्पर्श से आंखों के तेज से शिष्य को नया जीवन, नया चिन्तन, नया दर्शन, प्रदान करते हैं तो यही तो "**तमसो मा ज्योतिर्गमय**" की पादाम्बुज कल्प कथ्य है ।

मृत्योर्माअमृतंगमयः

मृत्यु मानव मात्र के लिए भयप्रद है, बालक हो अथवा वृद्ध, स्त्री हो अथवा पुरुष, पशु-पक्षी हो अथवा अन्य जीवनधारी, सभी इससे बचना चाहते हैं, लेकिन विधि की विड़म्बना के आगे कहीं किसी की पार नहीं पड़ती, सभी मृत्यु के आगे नतमस्तक हो युगों-युगों से काल कवलित होते चले आये हैं, आगे भी यह क्रम चलता जा रहा है यदि किसी ने मृत्यु को जीवन शृंगार बनाया है, हंसते हुए गले लगाया है, तो ऐसा वह व्यक्तित्व गुरु का ही है, जिसके आगे मृत्यु अपने आपको ठगा सा महसूस करती है, बौनी हो जाती है उनके व्यक्तित्व के सामने, क्योंकि गुरु ने तो सदा अमरता का पाठ पढ़ा है, और मृत्यु पर विजय प्राप्त करने की संजीवनी कला में वह पूर्ण पारंगत हैं ।

गुरु अपने शिष्य को आत्मवत् बनाना चाहता है, उसके मृत्यु की ओर बढ़ते कदमों को मोड़ कर उसे अमरता का पाठ पढ़ाता है, वह चाहता है कि अपने सामने ही वह अपने शिष्य को इस योग्य बना दे, कि वह उसके बाद भी स्वयं पूर्ण तेजस्विता प्राप्त करते हुए, समाज को नयी दिशा दे सके, उसके लक्ष्य और कार्य को आगे गति दे सके, शिष्य गुरु के चरणों में बैठ कर अपने जीवन को संवारता जाता है, गुरु रूपी कामधेनु का ज्ञान रूपी मधुर दुग्धपान करते हुए कल्पवृक्ष सी शीतल छांव रूपी गुरु का वरदानमय आशीर्वाद प्राप्त करते हुए वह कभी थकता और अघाता नहीं, नित्य नूतन होता हुआ अपने जीवन का पूरा कायाकल्प कर लेता है और इसे ही गुरु पादाम्बुज कल्प का सही रूप कहा जाता है इसीलिए शिष्य अपने गुरु को हर पल, हर क्षण प्रसन्न रखने का प्रयास करता है, क्योंकि उसे मालूम है—

शिवे क्रुद्धे गुरुस्त्राता गुरु क्रुद्धे शिवो न हिं । तस्मात्सर्वप्रयत्नेन श्री गुरूं शरणं व्रजेत् ।।

गुरु प्राणाधार

गुरु और शिष्य की धड़कनें जुदा-जुदा नहीं होतीं, शिष्य के रोम-रोम में गुरु की छवि समाहित रहती है, आंखों में गुरु का तेजस्वी स्वरूप नाचता है, हर पल, हर क्षण, उठते-बैठते, सोते-जागते शिष्य गुरु में ही खोया रहता है, उसका संसार गुरुमय हो जाता है, उसकी हर क्रिया गुरु को अर्पित होती है, अपना स्वयं का अस्तित्व

गलती हुई बर्फ सा गलता जाता है, और एक क्षण जीवन में वह आता है कि समस्त क्रियाओं के प्रति उसका कर्त्ता-भाव सदा-सदा के लिए तिरोहित हो जाता है, वह गुरु की परछाईं सा बन गुरुतुल्य हो जाता है, और यही क्षण होता है कि गुरु अपने शिष्य को दोनों बांहों में समेट सीने से लगा कर सब कुछ समाहित कर देता है अपने शिष्य में, गुरु पाद सेवा और गुरु युगल चरण शिष्य की धरोहर बन कर साकार हो उठती है, ज्ञान के विराट पुंज में बोध के उन्मुक्त वातायनी क्षणों में, जहां व्यापकता ही व्यापकता है, सत् चित् आनन्द का मधुर मिलन शिष्य का व्यापक जीवन बन जाता है और इसीलिए शिष्य गुरु को प्राणाधार मानते हुए अनायास स्वीकार कर लेता है—

गुरोः पादोदकं युक्त्वा सो सोऽक्षयोवटः। तीर्थराजः प्रयागश्च गुरुमूर्त्यै नमो नमः॥

कल्प प्रयोग विधि

किसी भी गुरुवार को प्रातः चार बजे ब्रह्म मुहूर्त में स्नान आदि नित्य क्रियाओं से निवृत्त होकर शुद्ध श्वेत धोती पहन कर सफेद आसन पर उत्तर की ओर मुंह कर बैठें, फिर मन की वाणी एवं हृदय को पवित्र करने के लिए 'ॐ' प्रणव बीज का तीन बार नाभि से उठाते हुए लम्बा उच्चारण करें, और फिर तीन प्राणायाम सम्पन्न करते हुए अपने सामने मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **'चांदी की चरण पादुका'** किसी पात्र में स्वस्तिक बना कर उस पर स्थापित करें, साथ ही **गुरु यन्त्र और चित्र** भी सामने रखें और फिर कुंकुम, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य एवं अगरबत्ती आदि से पूजन आरती सम्पन्न करें इसके बाद शुद्ध घी की ज्योति अपने सामने लगाए शुद्ध दूध गंगाजल चरणों में अर्पित करते हुए गुरु चिन्तन और गुरु चरणों का ध्यान करें, ।

तत्पश्चात् पद्मासन या सिद्धासन में बैठ कर अपने शरीर के रोम-रोम में गुरु को समाहित करते हुए उनकी उपस्थिति का अहसास करें, मूलाधार से लेकर सहस्त्रार तक सभी चक्रों में गुरु के ही बिम्ब का ध्यान करें, ज्ञान मुद्रा या तत्व मुद्रा में पांच मिनट शान्त चित्त बैठ कर अपने आपको गुरुमय बना लें और फिर नीचे लिखे मन्त्र का **'स्फटिक माला'** से नित्य ५१ माला जप १० दिन तक करें, तो यह गुरु पादाम्बुज कल्प सिद्ध होता है, जिसका फल साधक को जीवन भर स्वतः मिलता रहता है।

गुरु मन्त्र

॥ ॐ परम तत्वाय नारायणाय गुरुभ्यो नमः ॥

वास्तव में गुरु साधना से शिष्य को वह शक्ति प्राप्त होती है कि जब भी चाहे शान्त भाव से बैठ कर अपने गुरु का ध्यान करता है तो गुरुदेव उसके भीतर समाहित हो कर आधार प्रदान करते हैं, उसके संकट में मार्ग बतलाते हैं, गुरु भक्ति की महिमा तो अपार है।
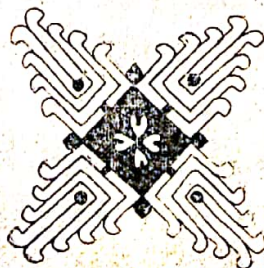
आकर्षण ही मूल शक्ति है

आश्चर्यजनक अद्‌भुत् प्रयोग

स्वर्णाकर्षण गुटिका से

मोहिनी एकादशी कार्य सिद्धि साधना में सफलता की दृष्टि से अद्वितीय तिथि कही जाती है, शास्त्रों में कहा गया है, कि मोहिनी एकादशी के दिन यदि कोई विशेष प्रयोग सम्पन्न किया जाय तो अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है, खास तौर से कुछ विशेष मान्त्रिक ग्रन्थों में बताया गया है कि **मोहिनी एकादशी** के अवसर पर **स्वर्णाकर्षण गुटिका** का प्रयोग किया जाय तो साधक को आश्चर्यजनक सफलता व सिद्धि प्राप्त होती है, इस वर्ष १३-५-६२ को **मोहिनी एकादशी** का यह महत्वपूर्ण पर्व आ रहा है, और साधकों के लिए यह स्वर्णिम अवसर है, जिस दिन वे इस प्रकृति के वरदान स्वरूप आश्चर्यजनक गुटिका पर प्रयोग कर कार्य सिद्ध कर सकते हैं।

मोहिनी एकादशी शास्त्रों में महत्वपूर्ण एकादशी मानी गई है, एक तरफ धार्मिक दृष्टि से इसका विशेष महत्व है, जब लोग पुण्यदायिनी नदियों में इस पर्व पर स्नान कर अपने पापों का क्षय करते हैं वहीं दूसरी ओर साधक और मन्त्र दृष्टा इस तिथि की प्रतीक्षा पूरे वर्ष भर करते रहते हैं, और महत्वपूर्ण प्रयोग इस तिथि को सम्पन्न कर निश्चित सफलता और अनुकूलता प्राप्त करते हैं।

यों तो इस महत्वपूर्ण पर्व पर कई प्रकार की साधना एव सिद्धियां सम्पन्न की जाती हैं, तांत्रिक ग्रन्थों में बताया है कि इस तिथि पर सम्पन्न किया हुआ कार्य पूर्ण रूप से

सिद्ध होता ही है, परन्तु मैंने पूरे जीवन में इस पर्व पर कई प्रकार की तान्त्रिक प्रयोग सम्पन्न किये हैं और यह अनुभव किया कि यदि इस तिथि के अवसर पर स्वर्णाकर्षण गुटिका से सम्बन्धित प्रयोग सम्पन्न किये जांय तो अचूक फल प्राप्ति और अद्भुत सफलता प्राप्त होती है।

स्वर्णाकर्षण गुटिका क्या है ?

यह काले रंग की गोल गोली की तरह गुटिका होती है, जो प्रकृति की तरफ से मानव को वरदान स्वरूप है, इसको यदि सूर्य की तरफ रख कर देखें तो इसमें से प्रकाश निकलता हुआ सा दिखाई देता है, या सूर्य के सामने देखने पर ऊपर से काला रंग होते हुए भी झांकने पर दूसरे प्रकार की रोशनी प्रतीत होती है, साधनाओं में इस गुटिका का विशेष महत्व है।

यह गुटिका सामान्य रूप से साधु संन्यासियों के पास प्राप्त हो जाती है, परन्तु यह दुर्लभ वस्तु है और जिसके घर में यह **स्वर्णाकर्षण गुटिका** होती है उसके घर में निरन्तर सभी दृष्टियों से उन्नति होती रहती है, वस्तुतः यह गुटिका धन-धान्य समृद्धि आदि देने में पूर्णतः सफल है।

यह गुटिका मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त होनी चाहिए तभी यह गुटिका विशेष अनुकूल फल प्रदान कर सकती है, सामान्य स्तर की गुटिका घर में सुख और सौभाग्य तो देती है परन्तु यदि इस पर विशेष प्रयोग सम्पन्न करना हो तो मन्त्र सिद्ध, चैतन्य, प्राणप्रतिष्ठा युक्त **स्वर्णाकर्षण गुटिका** ही होनी चाहिए।

मेरे जीवन के हजारों अनुभवों में से मैं इस विशेष पर्व के अवसर पर पांच महत्वपूर्ण प्रयोग स्पष्ट कर रहा हूं जो कि मेरे आजमाये हुए हैं और जिसके माध्यम से मुझे हर बार सफलता प्राप्त हुई है।

१–गृहस्थ प्रयोग

१–कन्या के शीघ्र विवाह के लिए।
२–पुत्र के लिए योग्य बहू की प्राप्ति के लिए।
३–पति पत्नी में मधुरता के लिए।
४–इच्छित सम्बन्ध बढ़ाने के लिए।
५–वशीकरण प्रयोग के लिए।

सामग्री

मन्त्र सिद्ध प्राणप्रतिष्ठा युक्त स्वर्णाकर्षण गुटिका, मूंगे की माला, अगरबत्ती, दीपक, जल पात्र।

अवधि

दो घण्टे।

प्रयोग विधि

जो साधक या साधिका इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहें वे इस दिन किसी समय **स्वर्णाकर्षण गुटिका** को शुद्ध जल से धोकर किसी तांबे के पात्र में चावलों की ढेरी बना कर उस पर **स्वर्णाकर्षण गुटिका** रख दें, और उस पर केसर का तिलक व पुष्प चढ़ा दें, सामने दूध का बना प्रसाद रखें और फिर नीचे लिखे मन्त्र का जप **मूंगामाला** से करें।

मन्त्र जप से पूर्व हाथ में जल ले कर संकल्प करें कि मैं अमुक कार्य की सिद्धि के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं।

मन्त्र

॥ ॐ वैचाक्षी कामरूपाय कामदेव्यै इच्छित
कार्य सिद्धि करि करि यं रं ह्रीं फट् स्वाहा ॥

इसमें मन्त्र जप संख्या निर्धारित नहीं है, केवल दो घण्टे मन्त्र जप करना चाहिए, इसके बाद **स्वर्णाकर्षण**

गुटिका को उठा कर किसी सुरक्षित स्थान पर रख देनी चाहिए, ऐसा करने पर साधक को शीघ्र ही सफलता मिलती है।

२–लक्ष्मी प्राप्ति के प्रयोग

इस प्रयोग के अन्तर्गत निम्न प्रकार के कार्यों की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है—

१-नया व्यापार प्रारम्भ करने व अनुकूलता प्राप्ति के लिए।
२-व्यापार में आश्चर्यजनक प्रगति के लिए।
३ आर्थिक उन्नति के लिए।
४-आकस्मिक धन प्राप्ति के लिए।

सामग्री

स्वर्णाकर्षण गुटिका, कमलगट्टे की माला, अगर-बत्ती, दीपक, केसर, जल पात्र।

अवधि

दो घण्टे।

प्रयोग विधि

इस प्रयोग को सम्पन्न करने के लिए साधक पीली धोती पहन कर उत्तर दिशा की तरफ मुंह कर के बैठ जांय, सामने लाल वस्त्र बिछा कर उस पर आठ चावलों की ढेरियां बनावें, और एक बड़ी ढेरी आगे बना दें, फिर इस पर **स्वर्णाकर्षण गुटिका** रख दें, इसके बाद उस पर केसर का तिलक करें और **कमलगट्टा माला** से मात्र दो घण्टे निम्न मन्त्र का जप करें—

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं धनधान्यादिपतये स्वर्णाकर्षण
कुबेराय समृद्धि देहि दापय स्वाहा ।।

मन्त्र जप करने से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि अमुक व्यापार या अमुक कार्य के लिए और उसमें पूर्ण सफलता के लिए यह प्रयोग इस विशेष तिथि व मुहूर्त के अवसर पर सम्पन्न कर रहा हूं, जिसमें मुझे पूर्ण सफलता मिले।

दो घण्टे मन्त्र जप करने के बाद उन चावलों की ढेरियों के साथ उस स्वर्णाकर्षण गुटिका को उसी कपड़े में बांध कर घर के किसी महत्वपूर्ण स्थान पर रख दें, ऐसा करने पर उसे शीघ्र ही मनोवांछित सफलता प्राप्त हो जाती है।

३–शत्रु स्तम्भन प्रयोग

इस प्रयोग के अन्तर्गत पांच प्रकार के कार्यों में सफलता प्राप्त की जा सकती है—

१-शत्रु की गति-मति बांधने के लिए।
२-शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने के लिए।
३ मुकदमे में सफलता प्राप्ति के लिए।
४–शत्रुओं को अपने अनुकूल बनाने के लिए।
५-किसी प्रकार के राज्य कार्य में सफलता प्राप्ति के लिए।

सामग्री

स्वर्णाकर्षण गुटिका, मूंगे की या हकीक की माला, अगरबत्ती, दीपक, जलपात्र।

प्रयोग विधि

जो साधक इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहते हैं, वे मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त चैतन्य **स्वर्णाकर्षण गुटिका** को जल से धो कर किसी पात्र में गन्धक की ढेरी बना कर उस पर रख दें और सामने गुड़ का प्रसाद चढ़ावें, फिर हाथ में जल लेकर संकल्प लें, कि अमुक शत्रु की बुद्धि नष्ट करने के लिए या अमुक मुकदमे में

सफलता के लिए या अमुक कार्य की सिद्धि के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं, जिसमें मुझे शीघ्र और पूर्ण सफलता मिले।

मन्त्र

।। ॐ क्रीं कालिकाय कार्य सिद्धि देवी मम
कार्य सिद्धि करि करि क्रीं क्रीं क्रीं हुं फट् ।।

यह प्रयोग मात्र दो घण्टे का है, और प्रयोग करने के बाद गुटिका को घर के किसी सुरक्षित स्थान पर रख दें और गंधक को जला दें, ऐसा करने पर शत्रु की बुद्धि गति-मति बंध जाती है, और साधक को अपने इच्छित कार्य में सफलता प्राप्त होती है।

इस प्रयोग को किसी को हानि पहुंचाने या द्वेष वश नहीं करना चाहिए, केवल आत्म रक्षार्थ ही प्रयोग करना चाहिए।

४-तन्त्र नष्ट प्रयोग

इस प्रयोग के अन्तर्गत तीन प्रकार के कार्यों की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है—

१- स्वयं पर या परिवार के किसी सदस्य पर कोई तान्त्रिक प्रयोग या टोना टोटका हो तो उसे दूर करने के लिए।
२- व्यापार पर या जीवन के अन्य किसी भी कार्य पर किसी ने जादू टोना कर दिया हो तो उसे नष्ट करने के लिए।
३- भूत, प्रेत पिशाच आदि भगाने के लिए।

सामग्री

स्वर्णाकर्षण गुटिका, मूंगे की माला, लोबान, धूप, जल पात्र।

अवधि

दो घण्टे (दिन के किसी भी समय)।

प्रयोग

जो साधक या साधिका इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहें वह इस दिन किसी समय **स्वर्णाकर्षण गुटिका** को मिट्टी के कुल्हड़ में रख कर उसे पीली सरसों या काली मिर्च से ढक दें अर्थात् उस कुल्हड़ में नीचे **स्वर्णाकर्षण गुटिका** रख कर उस पर लगभग सौ ग्राम काली मिर्च या सरसों डाल दें, और फिर हाथ में जल लेकर यह संकल्प लें कि मैं अमुक कार्य की सिद्धि के लिए इस प्रयोग को सम्पन्न कर रहा हूं, इसके बाद निम्न मन्त्र का जप दो घण्टे करें —

मन्त्र

।। ॐ क्लीं क्रीं हुं मम इच्छित कार्य सिद्धि करि
करि हुं क्रीं क्लीं फट् ।।

दो घण्टे मन्त्र जप होने के बाद उसी दिन रात्रि को इस कुल्हड़ को काली मिर्च (या सरसों) व स्वर्णाकर्षण गुटिका सहित कहीं पर जमीन में गाड़ दें, ऐसा करने पर शीघ्र ही उसे इच्छित सफलता प्राप्त हो जाती है।

५-स्वास्थ्य लाभ प्रयोग

इसके अन्तर्गत निम्न चार प्रकार के कार्यों की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है—

१- पुरानी बीमारी को मिटाने के लिए।
२- आरोग्य प्राप्ति के लिए।
३- अकालमृत्यु टालने के लिए।
४- पूर्ण यौवन सुन्दरता और स्वास्थ्य प्राप्ति के लिए।

बिन गुरु होइ न ज्ञान

हरि रूठे गुरु ठौर है गुरु रूठे नहिं ठौर

गुरु शिष्य सम्बन्धों का विवेचनात्मक अध्ययन

कोई भी संस्कृति अपनी विकास यात्रा में महान नहीं बन जाती, उस संस्कृति में कुछ ऐसे गुण अपने आप बन जाते हैं, और उनका सम्पूर्ण विकास होता है, परम्पराओं का पूर्ण निर्वाह होता है, एक ठोस आधार होता है, तभी संस्कृति महान बनती है, उसका एक गौरवशाली वर्तमान और आगे गौरवशाली भविष्य होता है।

भारतीय संस्कृति और पश्चिमी संस्कृति में आधारभूत अन्तर यह है कि उनके पास एक आधारभूत शक्ति नहीं है, बाहर से मजबूत दिखाई देने वाले ये व्यक्ति भीतर ही भीतर बड़े खोखले होते हैं, इनके जीवन लक्ष्य केवल भौतिक ही रहते हैं, न सम्बन्धों की परम्परा है न ज्ञान की परम्परा, इसलिए जब मन में एक भटकन शुरू होती है तो फिर कहीं और ठिकाना नहीं मिलता, इसीलिए तो वहां इतना अधिक व्यभिचार, अनाचार, अत्याचार है, क्योंकि वहां जीवन एक व्यापार है, जब कि भारतीय संस्कृति तो आदर्शों, त्याग, ज्ञान, तप, तपस्या, साधना, उपासना, शक्ति की उर्वर भूमि पर बिकसित एक विशाल वृक्ष है

हां, यहां जिसने भी कुछ पाया, वह दूसरों को सब कुछ बांटने का ही प्रयास किया, और उन्होंने अपना सब ज्ञान बांटा, अपने ज्ञान से हजारों-हजारों के जीवन में प्रकाश का उदय किया, वे ही गुरु कहलाये, इसीलिए गुरु को ईश्वर के समान माना गया, '**गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः**' क्योंकि गुरु शिष्य का निर्माण करते हैं, इसलिए ब्रह्मा हैं, गुरु शिष्य की रक्षा करते हैं इसलिए विष्णु भी हैं, और गुरु साक्षात् महेश्वर हैं क्योंकि वह शिष्यों के दोषों का संहार करते हैं, इसीलिए व्याकरण शास्त्र में **'गुरु'** शब्द का अर्थ है—गृणातीति गुरुः, **'गृ' निगरणे** अर्थात् जो अन्दर से कुछ निकाल कर दे, वह गुरु कहलाता है, और इसमें भी **"गुरु"** शब्द के पहले अक्षर **'गु'**

का मतलब है अन्धकार और दूसरे शब्द "रु" का अर्थ है उसको हटाने वाला और यही मूल गुरु तत्व है, ईश्वर के अस्तित्व के सम्बन्ध में शंका हो सकती है, अलग-अलग लोग अलग-अलग देवी देवताओं का, भगवान का ध्यान कर सकते हैं लेकिन गुरु के सम्बन्ध में कोई शंका मतभेद नहीं है, सभी ने गुरु की महानता और महत्व को माना है, इसीलिए **"यस्य देवे परा भक्ति यथा देवे तथा गुरौ"** अर्थात् जैसी भक्ति की आवश्यकता देवता के लिए है, वैसी ही गुरु के लिए भी आवश्यक है।

उत्तरकाण्ड **रामचरितमानस** में लिखा है, कि **'बिन गुरु होई न ज्ञान'** और गुरु के ज्ञान के विषय में **हिरण्य संहिता** में कहा गया है, कि—गुरु तो ज्ञान का सागर है, जिस ज्ञान को सद्गुरु देव ने अपने मुख से उच्चारित किया वह निरर्थक नहीं जाता और जब सागर अपने सामने है तो आप इस ज्ञान सागर से कितना ज्ञान ले सकते हैं, वह शिष्य की योग्यता पर निर्भर करता है इसीलिए एक जगह लिखा है कि—

सतगुरु बपुरा क्या करे, जो शिष माही चूक।
भावे त्यं परबोधि लै, ज्यों बंसि बजाई फूंक।।

वंसी में तो मधुर संगीत उत्पादन करने की पूरी क्षमता है, किन्तु उस ध्वनि को उत्पन्न करने वाला ही सिर्फ फूंक मारता रहे कोई लयबद्ध स्वर न निकाल सके, तो मधुर संगीत कैसे उत्पन्न होगा, यदि शिष्य ही ज्ञान का उपयोग न कर सके, ज्ञान को अपना न सके तो गुरु का क्या दोष।

जन मन मंजु मुकुर मन हरनी, किए तिलक गुन गन बस करनी।
श्री गुरु पद नख मनि गन जोती, सुमिरत दिव्य दृष्टि हिय होती।।

अर्थात् गुरु हृदय के विकारों को दूर कर उसे स्वच्छ दर्पण सदृश बना देते हैं, उनके चरण नखों से वह ज्योति निकलती है, जो हमारे हृदय को प्रकाशित कर देती है।

ईश्वर की कृपा न हो तो गुरु से मार्ग पूछ सकते हैं, अपने दोषों के सम्बन्ध में जान सकते हैं लेकिन यह भी सत्य है कि—

हरि रुठे गुरु ठौर है, गुरु रुठें नहीं ठौर।

गुरु के भेद

भारतीय शास्त्रों के अनुसार तीन प्रकार के गुरु माने गये हैं— १-कुल गुरु, २-विद्या गुरु और ३-धर्म गुरु। एक परिवार के गुरु कुल गुरु माने गये हैं और कुल गुरु साक्षात् उपस्थित हों या न हों, उनकी पूजा पूरे परिवार द्वारा की जाती है, दूसरे विद्या गुरु जो कि शिक्षा देते हैं, इनमें अध्यापक, शिक्षक का स्थान आता है, और तीसरे और सबसे महत्वपूर्ण गुरु धर्म गुरु हैं जो कि शिष्य अपने जीवन में अपनी आखों से देख समझ कर उन्हें ग्रहण करता है, धर्म गुरु से ही शिष्य दिक्षा ग्रहण करता है, धर्म गुरु से ही शिष्य वह गुरु मन्त्र प्राप्त करता है जिसका वह अपने पूरे जीवन पालन करता है, लेकिन शिष्य नाम का यह जीव बड़ा ही विचित्र होता है, यह जब गुरु के पास

आता है तो बड़ा ही अभिमान, अन्धकार, अहंकार तथा व्यक्तिगत स्वार्थों से भरा होता हैं, अपने आप को चोटो का खिलाड़ी समझते हुए कुश्ती लड़ने को तत्पर होता है, उसके भीतर ही भीतर इतना कोलाहल होता है कि उसे दूसरो वाणी सुनाई नहीं देती और सद्गुरु देव एक दृष्टि से ही पहिचान जाते हैं कि शिष्य कहां जा रहा है लेकिन वे बड़े ही विचित्र ढंग से विभिन्न रूपों में विभिन्न उपदेशों द्वारा सबसे पहले तो उसके भीतर के कोलाहल को शान्त कर, शान्त आत्म ज्ञान की प्रतिष्ठा कराते हैं इसीलिए कहा गया है कि—

गुरु कुम्हार, शिष कुम्भ है, गढ़ि-गढ़ि काढ़े खोट।
हाथ सहारा दे रहे, लागि न पावे चोट।।

और फिर गुरु क्या करते हैं, वे देखते हैं कि शिष्य कैसी मिट्टी का बना है, उसकी प्रकृति कैसी है, उसकी प्रकृति के अनुसार ही उसके भीतर की शक्तियों और अनुभूतियों को बढ़ावा देंगे, क्योंकि गुरु के पास तो तीन साधन हैं—उपदेश, उदाहरण अर्थात् दृष्टान्त और प्रभाव, श्रेष्ठ कोटि के शिष्य तो केवल उपदेश से ही समझ जाते हैं, और उपदेश से अधिक प्रभावशाली दृष्टान्त होता है, गुरुदेव उसे साक्षात् प्रत्यक्ष उदाहरण प्रस्तुत कर उसके भीतर की आत्म ज्योति को जगाते हैं और जब यह उपाय भी काम नहीं करता तो फिर प्रभाव ही एक मात्र उपाय है जिसमें गुरु अपनी शक्ति प्रयास से, अपनी दिव्य शक्तियों के माध्यम से शिष्यों के भीतर वह चीज डाल देते हैं, जो वह स्वयं है, गुरु का कार्य तो एक महान दायित्वपूर्ण है, वे शिष्यों के लिए मित्र भी हैं, पिता भी हैं उनकी आत्माओं को जगाने वाली आत्मा हैं, **श्री मद्भागवत** में लिखा है कि—

"ब्रूयुः स्निग्धस्य शिष्यस्य गुरवो गुह्यमप्युत"

अर्थात् शिष्य में यदि स्नेह हो तो गुरुदेव गुप्त से गुप्त रहस्य भी शिष्य को बता देते हैं।

शिष्य के लिए केवल एक ही कार्य महत्वपूर्ण है और वह है पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ सेवा, और जहां यह श्रद्धा हिली वहां वह शिष्य अपना शिष्यत्व त्याग ही देता है और यदि शिष्य द्वारा कभी गुरु का अपमान हो जाता है तो उसे भगवान शंकर की सेवा भी दोष मुक्त नहीं कर सकती, इसलिए शिष्य को चाहिए कि गुरु बनाने से पहले और गुरु के पास जाने से पहले अपने अहंकार को त्याग कर ही निश्छल भाव से जाना चाहिए, और गुरु शिष्य सम्बन्ध के बारे में **श्री यास्काचार्य** लिखते हैं —

स आतृणत्यवितथेन कर्णावदुःखं कुर्वन्नमृतं सम्प्रयच्छन्।
तं मन्येत पितरं मातरं च तस्मै न द्रुह्येत्कतमच्च नाह।।

अर्थात् गुरु तो सत्य नामक कुरेदनी से शिष्य के कानों को खोलता है, उसमें पहले से भरी हुई गलत-सलत बातों को खोद-खोद कर निकालता है और फिर शिष्य में अमृत भरता है, ये दो कार्य करने वाला गुरु होता है, और गुरु से द्रोह करने वाले को कहीं भी ठौर नहीं है।

इसीलिए शास्त्रों में कहा गया है कि सोच विचार कर योग्य गुरु का वरण करना चाहिए, केवल इसलिए नहीं कि आप किसी विशेष मत को मानने वाले हैं, हिन्दू धर्म के विभिन्न सम्प्रदाय के लोग अपने ही सम्प्रदाय में गुरु का वरण करते हैं, जो कि गलत है, यह एक देखा-देखी है, गुरु तो उसे बनाना चाहिए जिसके प्रति आपकी भावना जाग्रत हो, सात कार्य भावना के अनुसार करना चाहिए - १-मन्त्र, २-तीर्थ, ३-द्विज, ४-देव, ५-देवज्ञ, ६-भैषज अर्थात् वैद या डाक्टर, ७-गुरु। और एक बार जब इन्हें अपना लें, अपनी भावना का विकास कर लें तो फिर श्रद्धा नहीं तोड़नी चाहिए।

गुरु, शिष्य को जो जपनीय मन्त्र देते हैं, और यह मन्त्र देने का कार्य **"दीक्षा"** कहलाता है, गुरु, शिष्य को उसके स्तर के अनुसार उसकी दीक्षा का क्रम निर्धारित करते हैं, बिना दीक्षा प्राप्त शिष्य अधूरा ही है, अर्थात् बिना नाविक के भटकती हुई खाली नाव के समान है, दीक्षा मन्त्र देते ही गुरु शिष्य के जीवन रूपी नौका के नाविक का स्थान ग्रहण करता है, और उसे उसकी शक्ति के किनारे तक पहुंचाते हैं, इसलिए क्रमानुसार गुरुदेव से दस दीक्षाएं ग्रहण करनी चाहिए।

कुछ शिष्य गुरु कृपा को ऋण समझते हैं, और धन आदि से चुकाने का प्रयास करते हैं, लेकिन याद रहे कि गुरु शिष्य का सम्बन्ध कोई व्यापार नहीं है, गुरुत्व तो शिष्य के शरीर में बहते हुए रक्त के समान है, जो कि जब तक शरीर के भीतर रक्त बहता रहेगा तब तक यह गुरु कृपा का ऋण रहेगा। और शिष्य को यह जान लेना चाहिए कि जब तक उसके देह में प्राण है, तब तक गुरु उसे कोई भी आदेश दे सकते हैं और उसे इस आज्ञा का का पालन करना ही है। इसीलिए एक शिष्य ने लिखा है कि—

नास्था धर्मो न वसुनिचये नैव कामोपभोगे यद्भाव्यं तद्भवतु भगवन्पूर्वकर्मानुरूपम्।
एतत्प्रार्थ्यं मम बहुमतं जन्मजन्मातरेऽपि त्वपादम्भोरुहयुगगता निश्चलाभक्तिरस्तु ॥

हे भगवन्! मैं धर्म, धन-संग्रह और काम भोग की आशा नहीं रखता, पूर्व क्रमानुसार जो कुछ होता हो सो हो जाय, पर मेरी बार-बार प्रार्थना है कि जन्म-जन्मान्तरों में भी आपके चरणारविन्द युगल में मेरी निश्चल भक्ति बनी रहे। ●

ज्ञानस्वरूपम् निजभावयुक्तम्, आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नम्।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोग वैद्यं, श्रीमद्गुरुं नित्यमहं नमामि ॥

ज्ञानस्वरूप, स्वभाव में प्रतिष्ठित, आनन्दस्वरूप, आनन्द देने वाले, प्रसन्न, योगियों में श्रेष्ठ, स्तुत्य, संसार रोग के वैद्य, श्री सद्गुरु को मैं नित्य प्रणाम करता हूं।

श्री मत्परं ब्रह्म गुरुं स्मरामि, श्री मत्परं ब्रह्म गुरुं भजामि।
श्री मत्परं ब्रह्म गुरुं ददामि, श्री मत्परं ब्रह्म गुरुं नमामि ॥

मैं परब्रह्म गुरु का स्मरण करता हूं, परब्रह्म गुरु का भजन करता हूं। मैं परब्रह्म गुरु के सम्बन्ध में कहता हूं, और परब्रह्म श्री गुरु को नमस्कार करता हूं।

अमोघ अचूक प्रयोग

जीवन साफल्य सिद्धि प्रयोग

वाक् सिद्धि : सरस्वती साधना

रोग शोक शमन : महारौद्र त्र्यम्बक प्रयोग

वर्तमान युग में बुद्धि ही बल पर राज्य करती है, केवल लम्बा चौड़ा शरीर होने से ही, व्यक्तित्व प्रभावशाली नहीं बन जाता, वाणी में भी वह प्रभाव होना चाहिए. जिससे दूसरे आपका कहना मान सकें, और यह सिद्धि वाक् सिद्धि कहलाती है, और इसकी अधिष्ठात्री देवी है सरस्वती, प्रस्तुत लेख में सरस्वती सिद्धि के सम्बन्ध में एक महत्वपूर्ण साधना स्पष्ट की जा रही है, सारगर्भित विशेष प्रयोगों से पाठकों को लाभ अवश्य उठाना चाहिए।

शिक्षा का तात्पर्य है अध्ययन और अध्ययन कर उसका मनन और इस मनन का अपने जीवन में उपयोग लाना ही शिक्षा है, शिक्षा से व्यक्तित्व में एक आत्म-विश्वास आता है, प्रत्येक कार्य को सोचने समझने की क्षमता प्राप्त होती है, मस्तिष्क में ज्ञान की तीव्रता का विकास होता है, और जो अपने आपमें एक ज्ञान की प्रक्रिया प्रारम्भ कर लेता है, वही गुण कहलाता है, मनुष्य और मनुष्य के बीच में बुद्धि और ज्ञान की रेखा ही उसे साधारण और असाधारण बनाती है।

वाणी में ऐसा ओज और प्रभाव होना चाहिए कि आप अपने सहयोगियों से, अपने अनुयायियों से अथवा अपने अफसर को जो बात कहें वह बात अवश्य माने ही, और जो बात आपके ज्ञान में आ जाय वह चिरकाल तक याद रहे, यही तो सरस्वती की कृपा है।

बालकों में सीखने समझने की क्षमता विशेष रूप से होती है, इसलिए बालकों को सरस्वती साधना अवश्य करनी चाहिए, यह केवल उनका ही नहीं उनके माता-

पिता का भी कर्तव्य है कि बालक सरस्वती वन्दन नियमित रूप से अवश्य करे, मैंने अपने जीवन में देखा है कि कई व्यक्ति अपने भीतर तो ज्ञान बहुत समेटे होते हैं लेकिन जब उन्हें बोलने को कहा जाता है, तो वाणी जैसे लड़खड़ाने लग जाती है, कहना कुछ चाहते हैं और बोलते कुछ हैं, इसी प्रकार नौकरी के इन्टरव्यू में जो असफल रहते हैं उसका कारण अपने आप को, अपने ज्ञान को सही रूप से प्रस्तुत करने की कमी रहती है और यह दोष उनके जीवन को साधारण बना देती है, ऐसे व्यक्ति सफल नहीं हो पाते।

सिद्ध चण्डी : सरस्वती सिद्धि साधना

सरस्वती साधना प्रत्येक व्यक्ति को अवश्य ही सम्पन्न करनी चाहिए, जीवन में परीक्षाएं तो पग-पग पर चलती ही रहती हैं, हर माता-पिता चाहते हैं कि उनका बालक परीक्षा में अच्छे अंक प्राप्त करे हर व्यक्ति चाहता है कि उसकी स्मरण शक्ति तीव्र हो, इन्टरव्यू में, नौकरी में सफलता प्राप्त हो, जो बात कहे वह दूसरों पर प्रभाव डाले, नेतृत्व की क्षमता का विकास हो, तो सरस्वती साधना अवश्य करनी चाहिए, इसके अलावा कोई दूसरा मार्ग नहीं है और जब एक बार सरस्वती सिद्ध हो जाती है तो वह अपनी कृपा जीवन भर बनाये रखती है क्यों कि मां सरस्वती लक्ष्मी की तरह चंचला नहीं है, उसका तो स्थायी निवास रहता है।

साधना विधान

यह साधना किसी भी पुष्य नक्षत्र में प्रारम्भ की जा सकती है, साधक स्वयं श्वेत धोती पहिन कर पूर्व दिशा की ओर मुंह कर बैठें, जनेऊ धारण करें, यदि अपने बालकों को भी साधना कराना चाहते हैं तो उन्हें भी श्वेत धोती पहना कर अपने साथ बिठाएं, चन्दन का तिलक करें, सामने सरस्वती देवी का चित्र अथवा तस्वीर लगाएं, शुद्ध घी का दीपक तथा अगरबत्ती जलाएं, अपने सामने एक ताम्र पात्र में एक पुष्प रख कर उस पर मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त दिव्य चेतना **"सरस्वती यन्त्र"** स्थापित करें, उस पर केसर, तथा चन्दन चढ़ाएं, अपने हाथ में सरस्वती बीज मन्त्र लिख कर तथा यन्त्र के नीचे अपना नाम लिख कर सरस्वती की वन्दना करें।

विनियोग

वन्द्यां परागमविद्यां सिद्धिचण्डी संगिताम्। महा सप्तशती मन्त्र स्वरूपां सर्वसिद्धिदाम्। ॐ अस्य सर्व विधान महाराज्ञी सप्तशती मन्त्रः रहस्याति-रहस्यमयी पराशक्तिः। श्री मदाद्या भगवती सिद्धि चण्डिका सहस्राक्षरी महाविद्यां श्री मार्कण्डेय सुमेधा ऋषिर्गायत्र्यादि नानाविधानि छन्दांसि नवकोटि शक्तियुक्ता श्री मदाद्या भगवती सिद्धिचण्डी देवता श्री मदाद्या भगवती सिद्धिचण्डी प्रसादादखिलेष्टार्थे जपे विनियोगः।

न्यास

ॐ श्री नमः सहस्रादि। ॐ ऐं नमः भाले।
ॐ क्लीं नमो नेत्र-युगले। ॐ ऐं नमः कर्णद्वये।
सौं नमः नासापुटद्वये। ॐ नमो मुखे।
हौं ॐ नमः कंठे। ॐ श्रीं नमो हृदये।
ॐ ऐं नमो हस्त-युगे। ॐ क्लें नमः उदरे।
ॐ सौं नमः कट्यां। ॐ ऐं नमो गुह्ये।
ॐ क्लीं नमो जंघायुगे। ॐ हौं नमो जानु-द्वये।
ॐ श्रीं नमः पादादि सर्वांगे।

ध्यान

ॐ या माया मधुकैटभ प्रमथनी या महिषोन्मूलिनी।
या धूम्रेक्षणचण्ड-मुण्डदलनी, या रक्त बीजासनी॥
शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्य मथनी, या सिद्धलक्ष्मीपरा।
या देवी नवकोटि-मूर्ति सहिता मां पातु विश्वेश्वरी॥

मूल मन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्रौं श्रौं ह्यौं क्लौं ऐं सौं ॐ ह्रौं श्रीं ऐं क्लां सौं ऐं क्लां ह्रौं श्रीं जय जय महासरस्वती जगदाद्ये

बीज-सुरासुर-त्रिभुवन निदानेदयांकुरे सर्वतेजोरूपिणि महास्वरूपिणी महामहिमे महामहारूपिणि महामहामाये महामायाविरंचिसंस्तुते। विधि वरदे सच्चिदानन्दे विष्णु देहव्रते महामोहिनी मधुकैटभ जिह्वासिनी नित्य वरदान तत्परे। महास्वाध्यायवासिनी महामहो तेजधारिणी। सर्वाधारे सर्वकारण करणे अचिन्त्य रूपे। इन्द्रादि निखिलनिर्जर-सेविते सामगान गायन्तिपूर्णोदय कारिणि। विजये जयन्ति अपराजिते सर्वसुन्दरि रक्तांशुके सूर्यकोटि-शकाशेन्द्रकोटि सुशीतले अग्निकोटि दहनशीले यम कोटि क्रूरे वायु कोटि वहन सुशीतले।

विशेष

संकट हो, अथवा कष्ट इस मन्त्र का जप करने से संकट शान्त हो जाता है, प्रतिदिन पांच बार इस मन्त्र उच्चारण अवश्य करना चाहिए, यह अपने आपमें सिद्धि विजयप्रद मन्त्र है।

लक्ष्मी साधना हेतु यह मन्त्र अनुष्ठान अमावस्या की रात्रि में सम्पन्न करना चाहिए, मन्त्रों में जो शक्ति है, वह शक्ति साधक स्वयं साधना कर प्रत्यक्ष अनुभव कर सकता है, वास्तव में यह अनुष्ठान अत्यन्त ही शीघ्र प्रभावकारक है।

यदि किसी बालक के लिए यह प्रयोग करना है तो उसे अपने साथ बिठा कर उसके नाम का संकल्प ले कर पूरा अनुष्ठान सम्पन्न कर बालक की दाहिनी भुजा में यह यन्त्र बांध देना चाहिए। ★

कष्टपीड़ा अकाल मृत्यु शमन हेतु त्र्यम्बक प्रयोग

जहां शिव हैं वहां सिद्धि है, जहां शिव हैं वहां न तो कोई रोग है, न शोक, न विपत्ति, न मृत्यु भय, न बीमारी, न ग्रह दोष, न राज्य बाधा, साधना के क्षेत्र में ऐसा कोई व्यक्ति नहीं होगा, जो शिव की साधना न करता हो, चाहे वह संन्यासी हो अथवा गृहस्थ। भगवान त्र्यम्बक जो देवों के देव कहे जाते हैं, उनकी कृपा बिना सिद्धि असम्भव है।

भगवान भोलेनाथ अपनी कृपा का अक्षय भण्डार अपने भक्तों पर लुटाते रहते हैं, शीघ्र प्रसन्न हो कर भक्त को वर देते हैं और यदि भक्त संकट के समय उन्हें स्मरण भी कर लेता है तो उसका संकट दूर हो जाता है।

आगे की पक्तियों में शिव और शक्ति दोनों का सम्मिलित एक ऐसा शिव कवच दिया जा रहा है, जो कि सभी प्रकार की विपत्तियों के नाश और अकाल मृत्यु भय से छुटकारा दिलाने में समर्थ है। कितना भी भयंकर रोग हो यदि इस त्र्यम्बक कवच का पाठ कर जल रोगी को पिला दिया जाय तो उसे अवश्य ही आराम प्राप्त होता है।

विधान

अपने सामने सुन्दर शिव चित्र तथा भगवती दुर्गा का चित्र दीवार पर लगा कर एक ताम्र पात्र में शिव त्र्यम्बक **महामृत्युंजय यन्त्र** स्थापित कर शुद्ध घी का दीपक लगाएं, इस साधना में अपने पास जैसा भी शिवलिंग हो, उसे भी अवश्य स्थापित कर देना चाहिए तथा हाथ में जल ले कर चारों ओर घेरा बना लेना चाहिए, अब **'रुद्राक्ष माला'** से शिव का ध्यान कर एक माला **"ॐ नमः शिवाय"** मन्त्र का जप कर तत्पश्चात् हाथ में जल ले कर नीचे लिखा विनियोग मन्त्र पढ़ें फिर न्यास तथा ध्यान करें और उसी स्थान पर बैठे-बैठे कम से कम एक माला मूल मन्त्र का जप अवश्य करें, इसमें समय अवश्य लगेगा लेकिन मन्त्र जप पूर्ण रूप से अवश्य करना है।

प्रतिदिन एक माला मन्त्र अनुष्ठान सम्पन्न करते हुए ग्यारह दिन निरन्तर यह प्रयोग करना है तथा पूजा स्थान में यन्त्र के आगे जो कलश जल से भर कर रखें वह जल ग्रहण कर लें तथा दूध का नैवेद्य और फल पूजा समाप्त

कर प्रसाद स्वरूप ग्रहण करें।

पूरे ग्यारह दिन यह प्रयोग करते हुए एक समय भोजन करें।

विनियोग

अस्य श्री शिवकवच स्तोत्रमन्त्रस्य ब्रह्म ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः। श्री सदाशिव रुद्रो देवता ह्रीं शक्तिः रं कीलकं। श्रीं ह्रीं क्लीं बीजम्। श्री सदा-शिवप्रीत्यर्थे शिवकवच स्तोत्र जपे विनियोगः।

न्यास

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ रां सर्वशक्ति धाम्ने ईशानात्मने अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ क्लीं सर्वशक्ति धाम्ने वायव्यात्मने तर्जनीभ्यां नमः

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ मं रूं अनादि-शक्तिधाम्ने अघोरात्मने मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ शिरः स्वतन्त्र शक्तिधाम्ने वामदेवात्मने अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वालामालिने ॐ वां रौं अतुल-शक्तिधाम्ने सद्योजातात्मने कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ नमो भगवते ज्वलज्वलामालिने ॐ यं रं अनादि शक्तिधाम्ने सर्वात्मने करतल-कर पृष्ठाभ्यां नमः।

ध्यान

वज्र द्रंष्ट्रं त्रिनयनं काल कण्ठमरिन्दमम्।
सहस्रकरमत्युग्रं वन्दे शम्भुमुमापतिम्॥

अथापरं सर्वपुराणगुह्यमशेषपापौघहरं पवित्रम्।
जयप्रदंसर्वविपत्प्रमोचनं वक्ष्यामिशैवं कवचं हिताय ते॥

मूल मन्त्र

ॐ नमो भगवते सदाशिवाय सकल तत्वात्मकाय सर्व मन्त्र रूपाय सर्वयन्त्राधिष्ठिताय सर्व तन्त्ररूपाय सर्वतत्व विदूराय ब्रह्मरुद्रावतारिणे नीलकण्ठाय पार्वती मनोहर प्रियाय सोम सूर्याग्नि लोचनाय भस्मोल्लसत विग्रहाय महामणि मुकुट धारणाय माणिक्य भूषणाय सृष्टि स्थित प्रलय काल रौद्रावताराय दक्षाध्वरध्वंसकाय महाकाल भेदनाय मूलाधारैक नीलकाय, तत्वातीताय, गंगाधराय सर्वदेवाधिदेवाय षडाश्रयाय वेदान्त साराय।

सर्वतो रक्ष रक्ष मामुज्वलोज्वल, महामृत्युभयंमृत्युभयं नाशय नाशय, अरिभयमृत्सादयोत्सादय विषसर्वभयं शमय-शमय, चौरान् मारय मारय, मम शत्रूनुच्चाटयोच्चाटय, त्रिशूलेन विदारय विदारय, कुठारेण भिन्धि भिन्धि, खड्गेन छिन्धि छिन्धि, खट्वांगेनविपोथय विपोथय मूसलेन निष्पेषय निष्पेयय, वाणैः सन्ताडय सन्ताडय रक्षांसि भीषय भीषय, अशेष भूतानि विद्रावय विद्रावय, कुष्मांण्ड, वेताल, मारी-गण, ब्रह्मराक्षसगणान् सन्त्रासय सन्त्रासय, ममाभयं कुरु कुरु वित्रस्तंमामाश्वासयाश्वासय, नरकमहाभयान्मामुद्धरो-द्धर संजीवनय संजीवनय, क्षुत्तृडभ्याम् मामानन्दयानन्दय, शिव-कवचेन मामाच्छादयच्छादय मृत्युंजयं त्र्यम्बकं सदाशिवं नमस्ते॥

शिव साधना का यह प्रयोग मन्त्र यदि प्रतिदिन पांच बार जप किया जाय तो रोग तथा शोक साधक के पास फटक ही नहीं सकते। भगवान शिव की कृपा से साधक अपने मार्ग में आने वाली विपत्तियों को सरलता से दूर कर जीवन में पूर्ण शिवत्व की ओर अग्रसर होता है, तथा पूरे परिवार को सुख सौभाग्य शान्ति प्राप्त होती है।

धन्य-धन्य है उनका जीवन

जिन्हें सिद्ध है

महात्रिपुर सुन्दरी

आप भी सिद्ध कर सकते हैं

क्षणों को पकड़ कर उनका पूर्ण उपयोग कर अपनी इच्छाओं की पूर्ति ही तो जीवन है, ऐसा ही साधना के लिए भी माना जाता है, कुछ साधना काल ऐसे होते हैं, जो चैतन्य समय कहे जाते हैं।

प्रस्तुत आलेख त्रिपुर सुन्दरी साधना का महत्वपूर्ण गुप्ततर विधान है, जिसका प्रभाव स्थायी और रोम-रोम में आनन्द भर देने वाला है।

जीवन एक क्रम ही नहीं है, और न ही एक संग्राम है, जिसमें दिन-रात संघर्ष ही संघर्ष किया जाय, जीवन तो एक मधुर संगीत लय है, जिसमें सभी राग छिपे हैं, आनन्द के साथ जिएं और दूसरों के आनन्द में भी बढ़ोत्तरी हो, इस के लिए ही तो गृहस्थ की रचना हुई है।

दस महाविद्याओं का जब उल्लेख शास्त्रों में आता है, और साधक जब इनके विधान सम्पन्न करता है, तो एक विशेष अनुभूति प्राप्त होती है, शक्ति के लिए चामुण्डा की साधना करता है तो शत्रुनाश के लिए बगलामुखी की, समृद्धि के लिए तारा की, तो संकट मुक्ति के लिए त्रिपुर भैरवी की, प्रेत निवारण हेतु अदृश्य बाधा शान्ति हेतु धूमावती साधना करता है, तो लक्ष्मी के लिए कमला की साधना, ये सारी साधनाएं एक विशिष्ट उद्देश्य, एक कार्य विशेष के लिए सम्पन्न की जाती हैं, लेकिन जीवन में आनन्द का रस घोलना है, हर क्षण मधुरता प्राप्त करनी

है तो केवल एक ही साधना आवश्यक है, और वह है **"षोडशी त्रिपुर सुन्दरी"** साधना और यह साधना पुरुषों के लिए जितना आवश्यक है, उतनी ही स्त्रियों के लिए भी, युवा अथवा प्रौढ़ जीवन में मधुरता आनन्द से कोई वंचित नहीं रहना चाहता, षोडशी त्रिपुर सुन्दरी तो पुरुषार्थ, पराक्रम, आनन्द, सौभाग्य, गृहस्थ सुख की पूर्ण देवी है जिसका भौतिक प्रभाव के साथ-साथ आध्यात्मिक प्रभाव भी उतना ही निराला है।

विराट त्रिपुर सुन्दरी

षोडशी त्रिपुर सुन्दरी के एक स्वरूप की साधना का उल्लेख तो कई ग्रन्थों में आया है, लेकिन योगीजन जानते हैं, कि त्रिपुर सुन्दरी का विराट स्वरूप नौ स्वरूपों से युक्त है और जो साधक इन सभी स्वरूपों की साधना सम्पन्न कर लेता है, तो अपने जीवन को धन्य-धन्य कर लेता है।

यह कहना कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी कि विराट त्रिपुर सुन्दरी साधना जीवन का सौभाग्य है और साधना सम्पन्न होने पर त्रिपुर सुन्दरी साक्षात् प्रकट हो कर साधक को दर्शन देती है, और उसके सारे मनोरथ पूर्ण करती है।

इसे केवल भोग विलास की साधना ही न समझें यह तो आनन्ददायिनी साधना है, जिसको सम्पन्न करने से निम्न मनोरथ अवश्य पूर्ण होते हैं—

१-श्रेष्ठ स्वास्थ्य, २-श्रेष्ठ गृहस्थ सुख, ३-पराक्रम, ४-शक्ति में वृद्धि, ५-उत्तम पति, या पत्नी की प्राप्ति, ६-पुत्र प्राप्ति और पुत्र सुख, ७-जीवन के भोगों की प्राप्ति, ८-भाग्योदय, ९-जीवन की चिन्ताओं से मुक्ति।

जब पुण्य जागृत होते हैं तो जीवन में कार्य अपने आप ही सम्पन्न होने लगते हैं, और जो अपने जीवन में पूर्ण सुख और सौभाग्य की कामना करते हैं, तथा सही अर्थों में साधक हैं, वे इस साधना को अवश्य ही सम्पन्न करते हैं, और जब तक साधक अपने सांसारिक जीवन में पूर्णता प्राप्त नहीं कर लेता, वह पूर्ण योगी भी नहीं बन सकता।

ये विशिष्ट नौ दिन

किसी भी महीने की शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा से प्रारम्भ कर नवमी तक इस साधना को सम्पन्न करना है, इन नौ दिनों में पूजन का एक निश्चित क्रम रहता है और उसी नियम से तथा क्रम से साधना सम्पन्न करनी आवश्यक है, प्रत्येक दिन महात्रिपुर सुन्दरी के एक विशिष्ट स्वरूप की साधना की जाती है।

इस साधना में साधक स्नान कर पीली धोती धारण कर पीले आसन पर बैठें तथा सभी पूजन सामग्री की व्यवस्था पहले से ही कर लें।

पूजन सामग्री

इस पूजन सामग्री का प्रयोग नित्य होता है—१-जलपात्र, २-कुंकुम, ३-केसर, ४-चावल, ५-पुष्प, ६-अगरबत्ती ७-शुद्ध घृत का दीपक, ८-अबीर गुलाल, ९-मौली, १०-सुपारी, ११-लौंग इलायची, १२-फल, १३-दूध का बना हुआ प्रसाद और १४-दक्षिणा।

यह सामग्री पहले से ही प्राप्त करके रख देनी चाहिए जिससे कि नित्य पूजन में इसका प्रयोग किया जा सके।

विशिष्ट साधना सामग्री

इसके अलावा इस साधना में नित्य पूजन क्रम में अलग-अलग यन्त्रों की आवश्यकता होती है जिसका पूजन और प्रयोग अति आवश्यक है, ये यन्त्र अपने आप में अत्यन्त दुर्लभ और महत्वपूर्ण होते हैं, और पूरे जीवन भर के लिए इन यन्त्रों को अपने घर में स्थापना सभी दृष्टियों में सौभाग्यशाली कही गई है।

शास्त्रों के अनुसार निम्न तिथियों को निम्न यन्त्र की पूजा स्थापना, प्राण प्रतिष्ठा और मन्त्र जप सम्पन्न किया

जाता है ।

१-प्रतिपदा	– पहला दिन	–इन्दुरूपिणी विश्वरूपा महादेवी यन्त्र
२-द्वितीया	– दूसरा दिन	–अग्निरूपिणी दक्षिण-काली यन्त्र
३-तृतीया	– तीसरा दिन	–तेजस्वरूपा सनातनी देवी यन्त्र
४-चतुर्थी	– चौथा दिन	–अनाहत रूपिणी परा-देवी यन्त्र
५-पंचमी	– पांचवां दिन	–विशुद्धरूपिणी परमेश्वरी देवी यन्त्र
६-षष्टी	– छठा दिन	–आज्ञारूपिणी महा-चक्रेश्वरी देवी यन्त्र
७-सप्तमी	– सातवां दिन	–कामरूपिणी कामेश्वरी यन्त्र
८-अष्टमी	– आठवां दिन	–सहस्त्राररूपिणी दिव्ये-श्वरी यन्त्र
९-नवमी	– नवां दिन	–शिवरूपिणी त्रिगुणा देवी यन्त्र

उपरोक्त प्रकार से ही सम्बन्धित देवी का ध्यान और सम्बन्धित यन्त्र की पूजा सम्पन्न करते हुए सम्बन्धित मन्त्र का जप किया जाता है, इस साधना के अनुसार नित्य केवल ग्यारह माला मन्त्र जप होना चाहिए, उदाहरण के लिए पहले दिन विश्वरूपा महादेवी यन्त्र की पूजा करते हुए विश्वरूपा देवी का ध्यान कर विश्वरूपा महामन्त्र का ग्यारह माला मन्त्र जप किया जाता है ।

यह मन्त्र जप **"मनोहरा माला"** से ही सम्पन्न करने का शास्त्रों में विधान है, यह माला मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठायुक्त होनी चाहिए, साधकों को चाहिए कि उपरोक्त नौ प्रकार के दुर्लभ यन्त्रों को, जो कि सभी मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त हों, पहले से ही प्राप्त कर लेना चाहिए, जिससे कि समय पर इस अद्वितीय साधना को सम्पन्न किया जा सके ये सभी यन्त्र और माला आप कहीं से भी प्राप्त कर सकते हैं

साधना रहस्य

साधक प्रतिपदा अर्थात् प्रथम दिन को स्नान कर पीली धोती पहन करपीले आसन पर पूर्व की ओर मुंह कर बैठ जाए और सामने एक थाली में स्वस्तिक कुंकुम या केसर से बना कर उस पर प्रथम दिन ऊपर बताये हुए अनुसार **'विश्वरूपा महादेवी यन्त्र"** को स्थापित करें और उसे जल से स्नान करावें, पोंछ कर केसर का तिलक करें, अक्षत, पुष्प, नैवेद्य चढ़ावें और फिर **मनोहरा माला** से विश्वरूपा महादेवी मन्त्र का ग्यारह माला मन्त्र जप करें, इसी प्रकार मैं आगे की पंक्तियों में प्रत्येक दिन स्थापित होने वाली देवी के ध्यान और उसके मन्त्र को स्पष्ट कर रहा हूं—

१- प्रथम दिवस—

इन्दुरूपिणी विश्वरूपा महादेवी साधना

ध्यान

अभयं वरदं चैव हस्तं च सुर-सुन्दरि ।
धनुर्वाणधरां देवीं पाशांकुश धरां पुनः ।।

मन्त्र

।। ॐ ऐं ह्रीं श्रीं जूं सः अमृतं
विश्वरूपायै महादेव्यै नमः ।।

२- द्वितीय दिवस—

अग्निरूपिणी दक्षिण काली यन्त्र साधना

ध्यान

अभयं च वरं चैव दक्षिणे धारिणी सदा ।
खड्गं मुण्डं चैव मेऽस्मिन् धारयन्ति सनातनीम् ।।

मन्त्र

।। ॐ कां कालाग्नि रुद्रायै अग्निरूपिणी
दक्षिण काल्यै नमः ।।

३- तृतीय दिवस—

तेजस्वरूपा सनातनी देवी साधना

ध्यान

सर्व सिद्धि प्रदां देवीं जगच्च मोहिनीं पुनः ।
महामायां मोहिनीं च ज्ञानिनां ज्ञानदां सतीम् ।।

मन्त्र

।। ॐ काम-प्रद षोडशी कलात्मने
तेजस्वरूपा सनातनी देव्यै नमः ।।

४- चतुर्थ दिवस

अनाहत रूपिणी परादेवी साधना

ध्यान

अष्टभुजां महादेवीं रक्तवर्णां त्रि-शक्तिकाम् ।
धनुर्वाणं च खड्गं च चक्रं च दधतीं शिवाम् ।

मन्त्र

।। ॐ ह्रीं ऐं ईश्वरीं अनाहत रूपिणी
परा देव्यै नमः ।।

५- पंचम दिवस

विशुद्ध रूपिणी परमेश्वरी साधना

ध्यान

दश भुजां महादेवीं पीतवर्णां सनातनीं ।
कपालं खेटकं शंखं दर्पणं चामरं तथा ।।

मन्त्र

।। ॐ अं अर्थप्रद द्वादश कलात्मने विशुद्ध
रूपिणी परमेश्वरी देव्यै नमः ।।

६- षष्टम दिवस—

आज्ञा रूपिणी महाचक्रेश्वरी साधना

ध्यान

रक्त वस्त्र परीधानां कमलापति सेविताम् ।
संसार दुःख शमनीं संसारार्णव तारिणीम् ।।

मन्त्र

।। ॐ चं कुण्डलिनी जाग्रतं आज्ञारूपिणी
महाचक्रेश्वरी देव्यै नमः ।।

७- सप्तम दिवस —

काम रूपिणी कामेश्वरी साधन

ध्यान

पद्मासनां महा-मायां महापद्मासन स्थिताम् ।
एवं संचिन्त्येद् देवीं ब्रह्म मार्गेण गामिनीम् ।।

मन्त्र

।। ॐ कं कामरूपिणी कामेश्वरी देव्यै नमः ।।

८- अष्टम दिवस—

सहस्रार रूपिणी दिव्येश्वरी साधना

ध्यान

चिन्मयं परं शिवं देवि ध्यान-गम्यं सनातनम् ।
सारात् सार तरं देवी परमतत्व गोचराम् ।।

मन्त्र

।। ॐ अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि
सहस्रार रूपिणी दिव्येश्वरी नमः ।।

९- नवम दिवस —

शिव रूपिणी त्रिगुणा देवी साधना

ध्यान

नित्यानन्द निरन्तरं निरूपमं वेदैरपारं परम् ।
शिव शक्ति वरं देवि निर्गुणं सगुणात्मकम् ।।

मन्त्र

।। ॐ पं परमतत्वायै शिवरूपिणी
त्रिगुणात्मिका देव्यै नमः ।।

इस प्रकार नित्य पूजन करते हुए सम्बन्धित साधनाएं सम्पन्न करनी है, साधकों द्वारा पूर्ण आहुति अर्थात् नवम दिवस को पांच माला त्रिपुर सुन्दरी बीज मन्त्र का जप कर आरती इत्यादि सम्पन्न करनी चाहिए—

त्रिपुर सुन्दरी मन्त्र

।। ह्रीं कएलई ह्रीं हसकल ह्रीं सकलह ह्रीं ।।

इसके बाद नवें दिन नौ कुमारी कन्याओं को भोजन कराए और अपने समस्त अनुष्ठान को षोडशी त्रिपुर सुन्दरी के विराट स्वरूप को समर्पित करते हुए आशीर्वाद प्राप्ति की इच्छा रखें ।

ग्रह दोष बाधा निवारण

अनुष्ठान

इसमें कोई दो राय नहीं कि मानव के जीवन और भाग्य पर ग्रहों का बराबर प्रभाव रहता है, कई बार तो ऐसा होता है कि हम प्रयत्न करते हैं और जब सफलता दो चार हाथ दूर रह जाती है, तो सारा किया कराया काम बिगड़ जाता है, आपने अपने जीवन में कई बार यह अनुभव किया होगा कि प्रयत्न करने पर भी व्यापार में सफलता नहीं मिल पा रही है, या जिस प्रकार से बिक्री बढ़नी चाहिए उस प्रकार से नहीं बढ़ रही है, अथवा घर में जो सुख शान्ति होनी चाहिए वह नहीं हो पा रही है।

इसके अलावा भी छोटी-मोटी समस्याएं हैं, जिनसे मानव व्यथित रहता है और प्रयत्न करने पर भी सफलता नहीं मिल पाती, इन कार्यों की सिद्धि और सफलता के लिए कई छोटे-मोटे टोटके, कई छोटे-मोटे अनुष्ठान और प्रयोग करने पर भी जो अनुकूल फल प्राप्त होना चाहिए वह प्राप्त नहीं हो पाता तब देवताओं पर से हमारा विश्वास उठ जाता है, साधना से जी भर जाता है और मन में ऐसा आता है कि शायद यह सब कुछ व्यर्थ है।

परन्तु इसके मूल कारण में ग्रह बाधा होती है ज्योतिष का तो पूरा आधार ही ग्रह, हैं, यों तो आकाश में सैकड़ों ग्रह हैं, परन्तु मुख्यतः नौ ग्रह ही हैं, जिनका प्रभाव जाने अनजाने, चाहे अनचाहे हमारे ऊपर पड़ता ही रहता है और इन ग्रहों के प्रभाव से हमें अपने जीवन में सफलता असफलता मिलती रहती है।

इसीलिए तो कहा गया है कि जब चारों ओर से आदमी थक जाब और किसी उपाय में से समस्या का समाधान दिखाई नहीं दे, या कई बार प्रयत्न करने पर भी अनुकूल फल प्रतीत नहीं हो तब अवश्य ही समझ लेना चाहिए कि यह सब कुछ ग्रह बाधा की वजह से ही हो रहा है।

यों तो नौ ग्रहों में से कुछ ग्रह अनुकूल चलते रहते हैं, तो कुछ ग्रह विपरीत भी होते हैं, इसलिए किसी एक ग्रह के दोष निवारण की अपेक्षा **"ग्रह बाधा दोष निवारण प्रयोग अनुष्ठान"** सम्पन्न किया जाय तो साधक के समस्त ग्रह अपने आप ही अनुकूल हो जाते है और हम अनुभव करने लगते हैं कि जो काम हो नहीं रहा था या जिस

कार्य में बराबर बाधाएं और अड़चने आ रही थीं वह कार्य सम्पन्न होने लगा है और जो बाधाएं और अड़चने आ रही थीं वह कम हो गयी हैं या समाप्त हो गयी हैं।

यह मेरे जीवन का अनुभव है, कि मैंने अपने जीवन में जब भी बाधाएं अनुभव की या अन्य अनुष्ठान सम्पन्न करने पर भी अनुकूल फल प्रतीत नहीं होने लगे तब मैंने इसी उपाय और अनुष्ठान का सहारा लिया और मुझे तुरन्त अनुकूल परिणाम प्राप्त हो गये।

एक बार तो एक विशेष प्रकार की साधना को सिद्ध करने के लिए छः बार प्रयत्न और प्रयोग किये पर प्रत्येक बार असफलता ही हाथ लगी, जब मैंने अपने गुरु से इसकी चर्चा की तो उन्होंने मुझे इस प्रयोग को बताया था, और कहा था कि तुम्हें पहले ग्रह बाधा निवारण प्रयोग सम्पन्न कर लेना चाहिए, जिससे कि ग्रहों का विपरीत परिणाम भोगना न पड़े और आश्चर्य की बात यह है कि ऐसा अनुष्ठान करने के बाद जब मैंने मूल प्रयोग किया तो पहली ही बार में सफलता मिल गयी।

अनुष्ठान समय

इस अनुष्ठान को किसी भी दिन किया जा सकता है जिस दिन चन्द्रमा और नक्षत्र अनुकूल हो, या जिस दिन हृदय में प्रसन्नता हो, उसी दिन इस अनुष्ठान को कर लेना चाहिए, या कोई विशेष ग्रह बाधा दे रहा हो, तो उस विशेष ग्रह के दिन इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिए।

ग्रहों से सम्बन्धित प्रयोग करते समय उस ग्रह के प्रिय रंग वाले वस्त्र धारण करें और वैसे ही पुष्प अर्पित करें, ग्रह पूजा के साथ-साथ दान करने का भी विधान है, नीचे मैं इससे सम्बन्धित विवरण दे रहा हूं—

क्र०सं०	ग्रह	दान	रंग	जप संख्या
१–	सूर्य	तांबा	गुलाबी	६,०००
२–	चन्द्र	कांसा	सफेद	१०,०००
३–	मंगल	तांबा	लाल	७,०००
४–	बुध	पीतल	हरा	१७,०००
५–	गुरु	सोना	पीला	१८,०००
६–	शुक्र	तुला दान	सफेद	२०,०००
७–	शनि	लोहा	काला	१८,०००
८–	राहु	शीशा	काला	१८,०००
९–	केतु	खप्पर	काला	१८,०००

इसके अलावा सूर्य का रत्न—माणिक्य, चन्द्रमा का रत्न – मोती, मंगल का रत्न—मूंगा, बुध का रत्न—पन्ना, गुरु का रत्न—पुखराज, शुक्र का रत्न—हीरा, शनि का रत्न—नीलम, राहु का रत्न—गोमेद और केतु का रत्न—लहसनिया होता है, यदि संभव हो, तो इन रत्नों का भी दान करना चाहिए।

इसके साथ ही साथ मैंने ग्रहों से सम्बन्धित जप संख्या बताई है, अब मैं प्रत्येक ग्रह का मूल मन्त्र स्पष्ट कर रहा हूं जिनका जप करने से वह ग्रह पूर्णतः अनुकूल होता है-

नव ग्रह एवं उनसे सम्बन्धित मन्त्र

१-सूर्य : ॐ ह्रां ह्रीं सः।
२-चन्द्रमा : ॐ घौं सौं श्रौं सः।
३-मंगल : ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां सः।
४-बुध : ॐ ह्रौं ह्रौं ह्रां सः।
५-गुरु : ॐ श्रौं श्रौं श्रौं सः।
६-शुक्र : ॐ ह्रौं ह्रीं सः।
७-शनि : ॐ शौं शौं सः।
८-राहु : ॐ छौं छां छौं सः।
९-केतु : ॐ फौं फां फौं सः।

जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो इसका दसवां हिस्सा मन्त्र से घी और शहद मिला कर होम करना चाहिए, बाद में ब्रह्मण को भोजन करा कर उन्हें यथाशक्ति दान दक्षिणा देकर इस अनुष्ठान को सम्पन्न करना चाहिए।

पूज्य गुरुदेव का कथन है कि नवग्रह कवच स्तोत्र अनुष्ठान सभी ग्रहों की शान्ति के लिए आवश्यक है, जो साधक नित्य प्रति अपने पूजा के समय पांच बार ग्रह कवच का पाठ कर लेता है, उसे ग्रह बाधा की पीड़ा नहीं भोगनी पड़ती है।

इसके लिए साधक को मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **"नवग्रह कवच यन्त्र"** अपने पूजा स्थान में स्थापित कर नियमित रूप से पूजन कर कवच का पाठ करना चाहिए, जहां ऊपर प्रत्येक ग्रह से सम्बन्धित मन्त्रों का उल्लेख आया है, यदि यह मन्त्र जप अनुष्ठान **"सिद्ध नवग्रह तांत्रोक्त माला"** से सम्पन्न किय जाय तो ही उचित रहेगा इस नवग्रह माला का प्रयोग केवल ग्रह बाधा शान्ति में ही करना चाहिए अन्य तांत्रिक अथवा मांत्रिक प्रयोगों में नहीं लिया जाना चाहिए।

अपने पूजा स्थान में किसी पात्र में इस दुर्लभ कवच यन्त्र को स्थापित कर उसे जल से स्नान करा कर पौंछ कर कुंकुम या केसर से तिलक करें, सम्भव हो तो पुष्प चढ़ावें और सामने अगरबत्ती व दीपक प्रज्वलित करें, इसके बाद निम्न ग्रह कवच स्तोत्र का मात्र पांच बार पाठ करें—

कवच के इस पाठ से शत्रु समाप्त होते हैं, रोग दूर होते हैं, मृत्यु भय दूर हो जाता है, और व्यापार, धन आदि में निरन्तर वृद्धि होती रहती है, इसके अलावा आकस्मिक संकट से तो निश्चय ही मुक्ति मिलती है।

विनियोग

ॐ अस्य जगन्मंगलकारक ग्रह कवचस्य श्री भैरव ऋषिः अनुष्टुप् छन्दः। श्री सूर्यादि ग्रहाः देवता। सर्व कामार्थ संसिद्धये पाठे विनियोगः।

पार्वत्युवाच

श्री शान ! सर्वं शास्त्रज्ञ देवताधीश्वर प्रभो।
अक्षयं कवचं दिव्यं ग्रहादि-दैवतं विभो॥
पुरा संसूचितं गुह्यं सुभक्ताक्षय-कारकम्।
कृपा मयि तवास्ते चेत् कथय श्री महेश्वर॥

शिव उवाच

श्रृणु देवि प्रियतमे ! कवचं देव दुर्लभम्।
यद्धृत्वा देवताः सर्वे अमराः स्युर्वरानने।
तव प्रीति वशाद् वच्मि न देयं यस्य कस्यचित्।

ग्रह कवच स्तोत्र

ॐ ह्रां ह्रीं सः मे शिरः पातु श्री सूर्य ग्रह पतिः।
ॐ घौं सौं औं मे मुखं पातु श्री चन्द्रो ग्रह राजकः।
ॐ ह्रां ह्रीं ह्रां सः करो पातु ग्रह सेनापतिः कुजः।
पायादंशं ॐ ह्रौं ह्रौं ह्रां सः पादौ ज्ञो नृपबालकः।
ॐ औं औं औं सः कटिं पातु पायादमरपूजितः।
ॐ ह्रौं ह्रीं सः दैत्य पूज्यो हृदयं परिरक्षतु।
ॐ शौं शौं सः पातु नाभिं मे ग्रह प्रेष्यः शनैश्चरः।
ॐ छौं छां छौं सः कण्ठ देशं श्री राहुर्देवमर्दकः।
ॐ फौं फां फौं सः शिखी पातु सर्वांगमभितोऽवतु।
ग्रहाश्चैते भोग देहा नित्यास्तु स्फुटित ग्रहाः।
एतदशांश सम्भूताः पान्तु नित्यं तु दुर्जनात्। अक्षयं कवचं पुण्यं सूर्यादि ग्रह दैवतम्। पठेद् वा पाठयेद् वापि धारयेद् यो जनः शुचिः। स सिद्धिं प्राप्नुयादिष्टां दुर्लभां त्रिदशस्तुयाम्। तव स्नेह वशादुक्तं जगन्मंगल कारकम् ग्रह यन्त्रान्वितं कृत्वाभीष्टमक्षयमाप्नुयात्।

दिन का प्रारम्भ गुरु स्मरण से हो

हमारा प्रत्येक दिन हमारे लिए एक नया जीवन है, रात्रि के बाद जब व्यक्ति जागता है तो वह एक नया जीवन लेकर उठता है, शास्त्रों में लिखा है कि जीवन का प्रारम्भ और जीवन का अन्त गुरु स्मरण से होना चाहिए, इसी प्रकार हमारे प्रत्येक दिन का प्रारम्भ और अवशान गुरु स्मरण से ही उचित है, **ब्रह्मवैवर्त पुराण** में बताया गया है कि किसी भी प्रकार की पूजा, साधना, उपासना तब तक व्यर्थ है जब तक कि जीवन में गुरु न हो। **महाभारत** के शान्ति पर्व में बताया गया है कि किसी भी प्रकार की पूजा आदि के समय अपने दाहिने हाथ की ओर गुरु का आसन बिछा देना चाहिए और यह भावना मन में लानी चाहिए कि मेरे पास गुरु बैठे हैं, और उनके निर्देशन में ही मैं पूजा, साधना, अनुष्टान, व्रत, उपवास या अन्य कोई भी कार्य सम्पन्न कर रहा हूं।

विष्णु पुराण में बताया गया है कि जब तक गुरु का आसन बिछा कर गुरु-स्तवन न किया जाय तब तक किसी भी पूजा या साधना में सफलता प्राप्त नहीं होती।

साधक चाहे पुरुष हो या स्त्री, प्रत्येक के जीवन में गुरु का महत्व और स्थान आवश्यक है, उसे चाहिए कि वह प्रातः उठते समय गुरु-स्तवन करे इसके बाद ही दैनिक कार्य में प्रवृत्त हो।

वशिष्ठ ने कहा है कि स्नानादि से निवृत्त हो कर साधक या गृहस्थ आसन पर बैठ जांय, अपने दाहिनी ओर गुरु का आसन बिछा लें, उस पर गुरु की कल्पना करें या उनका चित्र या मूर्ति हो तो अपने सामने रखें और निम्न गुरु पाठ करें, इसके बाद ही अन्य किसी प्रकार की पूजा, व्रत, साधना या अनुष्ठान आदि सम्पन्न करें—

ॐ नमो गुरुभ्यो गुरु पादुकाभ्यो नमः परेभ्यः परपादुकाभ्यः।
आचार्य सिद्धेश्वर पादुकाभ्यो नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्यः ॥१॥

ऐंकारह्लींकार रहस्ययुक्त श्रींकारगूढ़ार्थ महाविभूत्या।
ॐकारमर्मप्रतिपादिनीभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥२॥

होत्राग्नि होत्राग्निहविष्यहोतृ होमादिसर्वाकृतिभासमानम्।
यद् ब्रह्म तद्बोधवितारिणीभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥३॥

कामादिसर्पव्रजगारुणाभ्यां विवेक वैराग्य निधिप्रदाभ्याम्।
बोधप्रदाभ्यां द्रुतमोक्षदाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥४॥

अनन्त संसारसमुद्रतार नौकायिताभ्यां स्थिरभक्तिदाभ्याम्।
जाड्याब्धिसंशोषणवाडवाभ्यां नमो नमः श्रीगुरुपादुकाभ्याम् ॥५॥

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥ ★

हरि अनन्त–अनन्त विष्णु

जीवन को दृढ़ आधार मिलता है

श्री विष्णु साधना से

साधकों के पत्र आते हैं कि ऐसी उपासना कौन सी है, जिसे साधक बारह माह सम्पन्न करें, और यह साधना सर्व फलप्रद हो। श्री विष्णु साधना ऐसी महान साधना है, जो सांसारिक और आध्यात्मिक दोनों ही दृष्टियों से उत्तम फल प्रदायक है, अद्भुत विधान सहित पूर्ण विवरण—
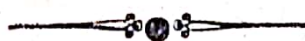
सृष्टि का प्रारम्भ भगवान विष्णु से माना गया है, और संसार विष्णु की ही माया लीला का स्वरूप है, भगवान श्री विष्णु का सगुण स्वरूप भी है और निर्गुण स्वरूप भी, माया रूपी स्वरूप में वे लक्ष्मी के साथ अपने भक्तों को अभीष्ट फल प्रदान करते हैं।

मुझे याद है कि बचपन में जिस गुरुकुल में हम जाते थे, वहां आचार्य प्रातः और सायंकालीन संध्या करते थे तो हम सब बालक वहां बैठते थे, संध्या की विशेष विधि का ज्ञान नहीं था, तो हमारे आचार्य श्री ने कहा कि सब बालक नेत्र बन्द कर "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः" मन्त्र का जप करें, यह जीवन की आधार शक्ति का मूल मन्त्र है सभी देव देवी श्री विष्णु की लीला के अधीन हैं और आज भी जब मन अशान्त होता है, कार्य में बाधाएं आती हैं कोई मार्ग नहीं मिलता तो मैं हाथ मुंह धोकर एक दीपक जला कर शान्त भाव से बैठ कर एक माला उपरोक्त मन्त्र का जप करता हूं, अपने आप एक मार्ग दिखने लगता है।

विष्णु साधना का पुरश्चरण बारह लाख मन्त्रों का है, और पुरश्चरण के पश्चात् इसके शतांश बारह हजार

मन्त्र का हवन विधान है ।

सर्वोपरि साधना : विष्णु साधना

— विष्णु साधना आधार शक्ति की साधना है, जिससे पूर्व जन्म कृत दोष और इस जन्म के दोष दूर होते हैं ।

— विष्णु साधना से व्यक्तित्व में तेजस्विता आती है, जीवन में नेतृत्व करने की क्षमता प्राप्त होती है ।

— विष्णु साधना कर्म प्रधान साधना है, साधक कर्मशील, कर्तव्यशील बनता है और अपने बलबूते पर आगे बढ़ने हेतु कार्यशील होता है ।

— विष्णु साधना शक्ति की साधना है, साधक को वह सुदर्शन चक्र शक्ति प्राप्त होती है, जिससे उसके मार्ग की बाधाएं अपने आप कटती चली जाती हैं ।

— विष्णु साधना से लक्ष्मी तो निश्चित रूप से प्रसन्न होती है, क्योंकि जहां विष्णु हैं वहां लक्ष्मी का आवास होता ही है ।

— विष्णु साधना पूरे परिवार की साधना है, और ग्रह शान्ति पारिवारिक उन्नति, पुत्र पौत्र प्राप्ति, सहयोग और सुख की साधना है ।

साधना का मार्ग संक्षिप्त नहीं है और जब भी साधना करें, तो पूर्ण विधि-विधान सहित सम्पन्न करें, उसी रूप में साधना से पूर्ण सफलता प्राप्त होती है, आगे जो विधान दिया जा रहा है उसके पांच भाग हैं, न्यास भी है, उसे उसी रूप में सम्पन्न करना है ।

साधना समय

श्री विष्णु साधना केवल श्राद्ध पक्ष को छोड़ कर कभी भी शुभ मुहूर्त में रविवार को प्रारम्भ की जा सकती है, पूर्ण सिद्धि बारह लक्ष्य मन्त्रों की है, वह साधक अपने कार्य अनुसार निश्चित कार्यक्रम से जप सम्पन्न कर सकता है, हर रविवार को यह पूजा विधान अवश्य ही सम्पन्न करना चाहिए, विष्णु मन्त्र को चैतन्य मन्त्र माना गया है, इसी कारण विष्णु साधना में सफलता प्राप्त होती ही है ।

साधना सामग्री

इस साधना में मूल रूप से **विष्णु महा यन्त्र** आवश्यक है, जिसे एक लकड़ी के पट्टे पर पीला वस्त्र बिछा कर स्थापित करें और पूरे अनुष्ठान में उसी रूप में स्थापित रहने दें, इसे हटाना ही नहीं है, इसके अतिरिक्त अबीर गुलाल कुंकुम, केसर, चन्दन, मौली, सुपारी तथा अर्पण हेतु प्रसाद आवश्यक हैं ।

इस साधना क्रम में विष्णु के सभी स्वरूपों का पूजन किया जाता है, वह पूजन करते हुए **विष्णु कमल बीज** चन्दन में डुबो कर अर्पित करना है, इस हेतु काफी मात्रा में चन्दन घिस कर पहिले से ही रख लेना चाहिए ।

साधना विधान

श्री विष्णु की साधना में विनियोग; साधना तथा

पंचावरण पूजा का विशेष विधान है, सभी दिशाओं में स्थित विष्णु स्वरूपों का पूजन किया जाता है अतः इसे इसी रूप में सम्पन्न करना है, सभी साधना क्रम में दाहिने हाथ से शरीर के अंगो को स्पर्श करना है, अर्पण भी दाहिने हाथ से किया जाता है, यह विशेष ध्यान रहे।

विनियोग

अस्य श्री द्वादशाक्षरमन्त्रस्य प्रजापतिर्ऋषिः, गायत्री छन्दः, वासुदेवः परमात्मा देवता, सर्वेष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

इसे पढ़ कर भूमि पर जल गिरा दें।

ऋष्यादिन्यास

ॐ प्रजापति ऋषये नमः शिरसि
गायत्री छन्दसे नमः मुखे
वासुदेव परमात्मा देवतायै नमः हृदि
विनियोगाय नमः सर्वांगे।

करन्यास

ॐ अंगुष्ठाभ्यां नमः
नमः तर्जनीभ्यां नमः
भगवते मध्यमाभ्यां नमः
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

हृदयादिन्यास

नमः शिरसे स्वाहा
भगवते शिखायै वषट्
वासुदेवाय कवचाय हुं
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट्

ध्यान

विष्णुं शारद चन्द्रकोटि सदृशं शंखं रथांङ्गगदाम्।
अम्भोजं दधतं सिताब्जनिलयं कान्त्या जगन्मोहनम्॥
आबद्धांगदहारकुण्डलमहामौलिं स्फुरत्कंकणम्।
श्रीवत्सांक मुदारकौस्तुभधरं वन्दे मनीन्द्रैः स्तुतम्॥

भावार्थ

हाथों में कोटिशरचन्द्रधवल शंख, चक्र, गदा, पद्म लिये, सिर पर मुकुट, कानों में कुण्डल, गले में हार एवं उदार कौस्तुममणि, बांहों पर केयूर एव कलाई पर चमचमाते करभूषण ककण धारण किये, अपनी कमनीय कान्ति से विश्वविमोहन करने वाले, ऋषि मुनि अभिवन्दित, श्री वत्सांक, परम महत्वद्योतक वक्षस्थल पर श्वेत तामावर्त (चिह्न विशेष), श्वेत कमलनिवासी, मुनीन्द्रों के द्वारा संस्तुत भगवान विष्णु का मैं वन्दन करता हूं।

पीठ शक्ति पूजन

अपने सामने जो यन्त्र स्थापना के लिए पीठ बनाई गई है, उस पर वस्त्र बिछा कर सबसे पहले पीठ पूजन किया जाता है, और यह पूजन पूर्व दिशा से प्रारम्भ करते हुए आठ दिशाओं तथा अन्त में पीठ के मध्य दिशा का पूजन किया जाता है, यह क्रम निम्न प्रकार से होगा, प्रत्येक पीठ शक्ति का ध्यान कर उस दिशा में पुष्प चढ़ाएं—

ॐ विमलायै नमः ॐ उत्कर्षिण्यै नमः
ॐ ज्ञानायै नमः ॐ क्रियायै नमः
ॐ योगायै नमः ॐ प्रह्वयै नमः
ॐ सत्यायै नमः ॐ ईशानायै नमः
ॐ अनुग्रहायै नमः (मध्य में))।

अब यन्त्र स्थापना प्रारम्भ होती है, हाथ में पुष्प ले कर उसे चन्दन में डुबो कर पीठ के मध्य में आसन स्थापित करें और निम्न मन्त्र बोलते हुए यन्त्र को पुष्प के इस आसन पर स्थापित करें—

॥ ॐ नमो भगवते विष्णवे सर्वभूतात्मने
वासुदेवाय सर्वात्मसंयोगपीठात्मने नमः ॥

अब पुनः 'ॐ नमो भगवते वासुदेवाय नमः' का पांच बार उच्चारण करें, तथा यह ध्यान करें कि श्री विष्णु देव यन्त्र स्वरूप में स्थित हैं और उन्हें पुष्प अर्पित करते हुए आवरण पूजा के लिए आज्ञा प्राप्त करें।

आवरण पूजा

श्री विष्णु यन्त्र के चार कोणों में चार आवरण पूजा तथा यन्त्र प्रवेश द्वार की ओर पंचम आवरण पूजा सम्पन्न होती है, साधक को इसी क्रम में मन्त्र बोलते हुए एक तुलसी पत्र तथा एक विष्णु कमल बीज चन्दन मे डुबो कर अर्पित करना है।

प्रथमावरण पूजा

१- ॐ हृदयाय नमः
२- ॐ नमः शिरसे स्वाहा
३- ॐ भगवते शिखायै वषट्
४- ॐ वासुदेवाय कवचाय हुं
५- ॐ नमो भगवते वासुदेवाय अस्त्राय फट्।

तत्पश्चात् अंजलि में पुष्प लेकर निम्न मन्त्र का उच्चारण करते हुए पुष्पांजलि चढ़ाएं—

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम्॥
पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

द्वितीयावरण

६- ॐ वासुदेवाय नमः वासुदेव श्री (पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः)
७- ॐ संकर्षणाय नमः संकर्षण श्री ,, ,,
८- ॐ प्रद्युम्नाय नमः प्रद्युम्न श्री ,, ,,
९- ॐ अनिरुद्धाय नमः अनिरुद्ध श्री ,, ,,
१०- श्री शान्त्यै नमः शान्त्य श्री ,, ,,
११- ॐ श्रियै नमः श्री ,, ,,
१२- ॐ सरस्वत्यै नमः सरस्वती श्री ,, ,,
१३- ॐ रत्यै नमः रति श्री ,, ,,

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम्॥
पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

यह द्वितीयावरण की पूजा है।

तृतीयावरण पूजा

१४- ॐ केशवाय नमः केशव श्री (पादुकां पूजयामि-तर्पयामि नमः)
१५- ॐ नं नारायणाय नमः नारायण श्री ,, ,,
१६- ॐ मों माधवाय नमः माधव श्री ,, ,,
१७- ॐ भं गोविन्दाय नमः गोविन्द श्री ,, ,,
१८- ॐ गं विष्णवे नमः विष्णु श्री ,, ,,
१९- ॐ वं मधुसूदनाय नमः मधुसूदन श्री ,, ,,
२०- ॐ तें त्रिविक्रमाय नमः त्रिविक्रम श्री ,, ,,
२१- ॐ तां वामनाय नमः वामन श्री ,, ,,
२२- ॐ सु श्रीधराय नमः श्रीधर श्री ,, ,,
२३- ॐ दे हृषीकेशाय नमः हृषीकेश श्री ,, ,,
२४- ॐ वां पद्मनाभाय नमः पद्मनाभ श्री ,, ,,
२५- ॐ यं दामोदराय नमः दामोदर श्री ,, ,,

ॐ अभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥
पूजिताः तर्पिताः सन्तु।

यह तृतीयावरण की पूजा है।

चतुर्थावरण

२६- ॐ लं इन्द्राय नमः इन्द्र श्री (पादुकां पूजयामि-तर्पयामि नमः)
२७- ॐ रं अग्नये नमः अग्नि श्री ,, ,,
२८- ॐ यं यमाय नमः यम श्री ,, ,,
२९- ॐ क्षं निर्ऋतये नमः निर्ऋति श्री ,, ,,

३०- ॐ वं वरुणाय नमः वरुण श्री ,, ,,
३१- ॐ यं वायवे नमः वायु श्री ,, ,,
३२- ॐ कुं कुबेराय नमः कुबेर श्री ,, ,,
३३- ॐ हं ईशानाय नमः ईशान श्री ,, ,,
३४- ॐ ग्रां ब्रह्मणे नमः ब्रह्म श्री ,, ,,
३५- ॐ ह्रीं ग्रनन्ताय नमः ग्रनन्त श्री ,, ,,

ॐ ग्रभीष्ट सिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुर्थावरणार्चनम् ।।
पूजिता तर्पिताः सन्तु ।

यह चतुर्थावरण की पूजा है ।

पंचमावरण

३६-ॐ वं वज्राय नमः ३७-ॐ शं शक्तये नमः
३८-ॐ दं दण्डाय नमः ३९-ॐ खं खड्गाय नमः
४०-ॐ पं पाशाय नमः ४१-ॐ ग्रं ग्रंकुशाय नमः
४२-ॐ गं गदायै नमः ४३-ॐ त्रिं त्रिशूलाय नमः
४४ ॐ पं पद्माय नमः ४५-ॐ णं चक्राय नमः

ॐ ग्रभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पंचमावरणार्चनम् ।।
पूजिताः तर्पिताः सन्तु ।

यह कह कर पंचमावरण की पूजा समाप्त करें ।

ग्रब धूप इत्यादि देकर नमस्कार कर शान्त भाव से बैठ कर "वैजयन्ती माला" से "ॐ नमो भगवते वसुदेवाय" मन्त्र का जप करना चाहिए, जप की संख्या साधक की इच्छा पर निर्भर करती है ग्रौर यह क्रम निरन्तर चलते रहना चाहिए, शास्त्रोक्त विधान है कि १२ ग्रक्षर के इस मन्त्र का सम संख्या लक्ष ग्रर्थात् १२ लाख मन्त्रों का जप करने से साधक को पूर्ण सिद्धि प्राप्त होती है, तथा भगवान विष्णु की ग्रभीष्ट कृपा सिद्धि से साधक मनोवांछित फल प्राप्त करता है, सब प्रकार के पाप दोष दूर हो कर साधक श्री विष्णु का तेज ग्रहण करने में समर्थ रहता है, यह साधना तो निश्चय ही सर्वोत्तम साधना है । ●

(पृष्ठ सख्या १२ का शेष भाग)

सामग्री

स्वर्णाकर्षण गुटिका, ग्रगरबत्ती, जल पात्र ।

ग्रवधि

दो घण्टे ।

प्रयोग विधि

इस दिन यह प्रयोग किसी भी समय सम्पन्न किया जा सकता है, किसी ताम्र के पात्र में **स्वर्णाकर्षण गुटका** को रखकर उस पर धीरे-धीरे जल डालते हुए निम्न मन्त्र का जप करें, जप से पूर्व हाथ में जल लेकर संकल्प करें कि मैं स्वयं के लिए या ग्रमुक व्यक्ति के लिए ग्रमुक कार्य की सिद्धि के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं इसके बाद **हकीक माला** से निम्न मन्त्र का जप करें —

मन्त्र

।। ॐ यं स्वर्णाकर्षण गुटिकायै मम
कार्य सिद्धि करि करि हुं फट् ।।

यह मन्त्र दो घण्टे जप करें ग्रौर उसके बाद इस स्वर्णाकर्षण गुटिका पर चढ़ाया हुग्रा जल उस रोगी व्यक्ति के शरीर पर ग्रौर घर में छिड़क दें, ऐसा करने पर शीघ्र ही उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती है ।

ऊपर मैंने जो प्रयोग बताये हैं, उनमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि एक प्रयोग के लिए जो **स्वर्णाकर्षण गुटिका** प्रयोग में ली जायेगी, उसे दूसरे प्रयोग या ग्रनुष्ठान में उपयोग नहीं की जा सकेगी, प्रत्येक प्रयोग के लिए ग्रलग-ग्रलग **स्वर्णाकर्षण गुटिका** होनी चाहिए ।

ऊपर मैंने इस ग्रवसर पर पांच महत्वपूर्ण प्रयोग दिये हैं जो कि मेरे ग्रनुकूल हैं ग्रौर कार्य सिद्धि में पूर्ण रूप से सहायक हैं, यदि साधक या साधिका पूर्ण निष्ठा ग्रौर श्रद्धा के साथ साधना करें तो ग्रवश्य ही उसे सफलता प्राप्त होती है । ●

गुरु कृपा का प्रत्यक्ष फल

गुरुदेव अपनी लीलाओं को विभिन्न रूप से शिष्यों के सम्मुख प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष दर्शाते हैं, ऐसी ही चमत्कारिक अनुभूतियां नित्य प्रति हजारों-हजारों शिष्यों के जीवन में घटती रहती हैं, इस स्तम्भ के अन्तर्गत आप भी आमन्त्रित हैं, अपनी अनुभूतियों को गुरु कृपा का अमृत प्रसाद का अनुभव शिष्यों के साथ बांटने के लिए। —

मैं जन्म से जैन हूं, और जैनी होते हुए भी साधनाओं में मेरी विशेष रुचि रही है, पेशे से मैं इन्जीनियर हूं और जुलाई ९० में मुझे गुरुदेव द्वारा दीक्षा प्रदान की गई इस दीक्षा के वाद तो मेरा कायाकल्प हो गया, कार्यालय के पते से पत्रिका आने से मुझे आस-पास के लोग तथा कार्यालय के अन्य लोग इस क्षेत्र में अर्थात् मन्त्र तन्त्र के सम्वन्ध में एक विशिष्ट ज्ञाता समझने लगे, जवकि वास्तव में मैं जानता हूं कि मेरे पूर्व जन्मकृत दोषों, इस जन्मकृत दोषों के कारण अभी अधूरा ही हूं, जो कुछ भी करता हूं, और जो कुछ प्रत्यक्ष प्रमाण देखता हूं वह सब गुरु कृपा का आशीर्वाद है और मेरे सव कार्य गुरुदेव को ही अर्पित हैं।

अभी एक महीने पूर्व की बात है, रात्रि के करीव साढ़े दस वजे मेरे कार्यालय के सज्जन अपने साथ एक व्यक्ति को लेकर मेरे निवास पर आये और उन्होंने वताया कि इन सज्जन का ६ वर्ष का वच्चा गायव है जो कि किसी रंजिश वश किसी के द्वारा अपहृत कर लिया गया है, वह वच्चा वापस दिलाना है, समस्या वहुत गम्भीर थी, मैं अपने पूजा स्थान पर गया और गुरुदेव के चित्र के सम्मुख वैठ कर गुरु मन्त्र का जप कर उनसे समस्या समाधान की प्रार्थना की फिर पूजा स्थान से वाहर आ कर मैंने गुरुदेव के निर्देशानुसार उन्हें बताया कि प्रातः ९ वजे से पहले वच्चा मिल जायेगा फिर अचानक मुझे क्या हुआ और गुरुदेव का कुछ विशेष निर्देश मिला, अतः मैंने उन दोनों सज्जनों को रोका और कहा कि अभी आप वैठें, आपके जाने का मुहूर्त नहीं हुआ है, फिर मैंने पूज्य गुरुदेव के निर्देशानुसार जो आवाज मेरे भीतर आई उसके अनुसार उन्हें वताया कि अमुक दिशा तथा अमुक स्थान पर वह वच्चा मिल जायेगा।

उस पिता को चैन कहां, मेरे यह कहने के बावजूद कि वच्चा दूसरे दिन मिल जायेगा, दूसरे दिन जब मैं कार्यालय पहुंचा तो पता चला कि वह बच्चा एक मोटर साइकिल पर ले जाया जा रहा था पुलिस द्वारा मेरी बताई हुई संभावित जगह पर ही कब्जे में लिया गया और फिर रात्रि में ही करीब १२ बजे बच्चे को उसके माता-पिता को सौंप दिया गया।

इस घटना को मैं अपने ऊपर पूज्य गुरुदेव की कृपा और अनुग्रह न कहूं तो क्या कहूं, मेरे पास तो कोई सिद्धि नहीं है केवल गुरु मन्त्र है, बाकी सब तो गुरु देव की ही लीला है। ●

सूर्यकान्त जैन
पारस सदन, आर्य नगर (खोया मण्डी के सामने)
लखनऊ-२२६००४ (उ०प्र०)
पत्रिका सदस्यता संख्या—८२२५

क्या आप तंत्र प्रभाव से पीड़ित हैं ?

क्या आपको अनुष्ठान में सिद्धि प्राप्त नहीं होती ?

तो कीजिए

उत्कीलन प्रयोग

मन्त्र जप तथा अनुष्ठान सभी साधक सम्पन्न करते हैं लेकिन सफलता केवल कुछ को ही प्राप्त होती है, इसका कारण यह है कि ज्यादातर व्यक्तियों का जीवन एक विशेष प्रक्रिया द्वारा बंधा होता है, उनके मन्त्र कीलित होते हैं उन पर मान्त्रिक, तान्त्रिक प्रयोग किया होता है, अतः साधना में सिद्धि हेतु उत्कीलन प्रयोग तो आवश्यक ही है।

जीवन भी एक दौड़ है, और विशेष बात यह है कि इस दौड़ में लक्ष्य की ओर कोई नहीं देखता बस अपने दाएं बाएं अवश्य देखते हैं कि दाएं वाला व्यक्ति अर्थात् पड़ौसी, मित्र, सहपाठी, व्यापारिक प्रतिद्वन्दी क्या कर रहे हैं इसी प्रतिस्पर्द्धा में जीवन में उलटे-सीधे कर्म करते हुए, भागते जाते हैं, यदि पड़ौसी ने अथवा कार्यालय के सहयोगी ने कोई वस्तु खरीद ली है तो उसे भी वह खरीदने का प्रयास अवश्य करेगा, अपने स्वयं के बारे में विचार करने की क्षमता बहुत कम व्यक्तियों में होती है, अपनी क्षमता का आंकलन कर अपना जीवन लक्ष्य निर्धारित कर अपने बल बुद्धि विवेक का प्रयोग कर कार्य करना बहुत कम लोगों को आता है, अपनी गलतियां, अपने दोषों पर विचार करना, और उन दोषों का निराकरण करना जो नहीं सीखता उसे सफलता कैसे

मिल सकती है ।

साधना करते हैं, मन्त्र अनुष्ठान करते हैं और जब सफलता नहीं मिलती तब या तो दोष मन्त्र अनुष्ठान पर ही डालते हैं अथवा दोषों का भार भुगतना पड़ता है गुरुदेव जी को, कहते हैं कि हम इतनी बार गुरुदेव जी के पास गये, इतनी बार अनुष्ठान किया पूरी विधि से कार्य किया, इसमें सफलता नहीं मिली तो शास्त्र ही झूठे हैं, क्या किसी ने यह विचार किया है, कि हो सकता है, मेरी ही क्रिया प्रक्रिया, मेरी ही क्षमता में कोई दोष हो, मेरे ही पाप कर्मों के कारण सफलता नहीं मिल रही हो, क्या ऐसा तो नहीं है, कि मेरा जीवन ही कीलित किया हुआ हो, प्रत्येक साधक को इस प्रश्न पर भी विचार करना आवश्यक है ।

कीलन दोष क्या है ?

कीलन का तात्पर्य है, एक बन्धन, जिस प्रकार एक खूंटे से बधा पशु उस खूंटे के चारों ओर तो चक्कर लगा सकता है लेकिन वह सीमा से आगे नहीं बढ़ सकता, खूंटे से गले तक की रस्सी किसी के लिए छोटी हो सकती है और किसी के लिए बड़ी, अर्थात् बन्धन तो बन्धन ही हैं, वह जंगल के पशु की भांति स्वच्छन्द विचरण तो नहीं कर सकता, इसी प्रकार यदि किसी व्यक्ति की शक्तियों का कीलन किया हुआ है, और यह कीलन उसके कर्मों के कारण, उसके दोषों के कारण, उस पर किये गये किसी तांत्रिक प्रयोगों द्वारा आदि शक्ति के प्रभाव से हो जाता है और जब तक यह दोष दूर नहीं हो जाता तब तक वह कितना ही प्रयास करे उसके कार्य सफल नहीं हो पाते, उसके देखते-देखते उसके साथ वाले जीवन के दौड़ में आगे निकल जाते हैं और वह एक पशु की भांति अपने ही स्थान पर बंधा छटपटाता रहता है ।

क्या कीलन दोष का कोई उपाय है ? क्या कीलन दोष ऐसा कलंक है, जिसे उतारा ही नहीं जा सकता ? क्या साधक अपने भीतर अपनी शक्ति का उस स्तर तक विकास नहीं कर सकता, जिससे कीलन दोष दूर हो जाय ?

ठीक यही प्रश्न तन्त्र के आदि रचयिता भगवान शिव से पार्वती ने किया था कि हे प्रभु ! आप तो भक्तों पर परम कृपा करने वाले हैं, आगम-निगम बीज मन्त्रों के स्वरूप हैं, भक्ति मुक्ति के प्रदाता हैं फिर अपने मन्त्रों का कीलन क्यों किया ? क्यों सांसारिक प्राणियों को मन्त्र सिद्धि में पूर्णता प्राप्त नहीं होती ?

देवों के देव भगवान शिव ने कहा, कि जैसे-जैसे युग बदलेगा वैसे-वैसे लोगों में भक्ति प्रीति कम होगी, राग, द्वेष, इर्ष्या, विरोध, शत्रुता, में वृद्धि होगी एक प्राणी दूसरे प्राणी को देख कर प्रसन्न नहीं होगा, अपितु ईर्ष्या करेगा और इस ईर्ष्या के वशीभूत अपनी शक्तियों का उपयोग बुरे कार्यों में व्यय करेगा, यदि ऐसे व्यक्तियों के हाथ में मन्त्र सिद्धि, तन्त्र सिद्धि प्राप्त हो गई तो वे संसार में विपत्ति की स्थिति उत्पन्न कर देंगे, फिर भी मैं तुम्हारे स्नेहवश तन्त्र, मन्त्र, यन्त्र उस पर उत्कीलन की वह विधि स्पष्ट करता हूं जिसके कारण सात्विक विचार वाले धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के नियमों का पालन करने वाले साधक को यह कीलन दोष शान्त करने में सफलता प्राप्त होगी, अपने ऊपर व्यक्तियों द्वारा किये गये तन्त्र दूर कर सकेगा, अपने तन्त्र ज्ञान का रक्षा के लिए प्रयोगे करेगा ।

उत्कीलन महाविधान

शिव पूजन सम्पन्न कर उत्कीलन विधान सम्पन्न करना चाहिए, और इस विधान हेतु **"रौद्र शिव महाकाल यन्त्र" "तान्त्रोक्त उत्कीलन यन्त्र" '५१ तान्त्रोक्त फल'** तथा अष्टगन्ध, और भस्म आवश्यक है, यदि श्मशान की भस्म की व्यवस्था हो सकती है, तो उसी का प्रयोग करना चाहिए ।

सम्पूर्ण प्रक्रिया

यह विधान अर्द्धरात्रि को ही सम्पन्न किया जाता है, और सात दिन तक निरन्तर प्रयोग करना आवश्यक है । सोमवार से प्रारम्भ कर सोमवार को यह प्रक्रिया

पूर्ण होती है, अपने सामने एक बाजोट बिछा कर उस पर एक लाल कपड़ा बिछा दें तथा पूरे पीढ़े पर श्मशान की भस्म तथा अष्टगन्ध फैला दें, उस पर ५१ तिल तथा सरसों की ढेरियां बनाएं तथा प्रत्येक ढेरी पर एक-एक **तान्त्रोक्त फल** रख दें, अब अपने सामने **रौद्र शिव महाकाल यन्त्र** को दूध से धो कर स्थापित करें तथा उसके पास मन्त्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त **तांत्रोक्त उत्कीलन यन्त्र** क्रमशः स्थापित करें, दोनों यन्त्रों पर भस्म और पुष्प अर्पित करें।

विनियोग

ॐ अस्य श्री सर्वयन्त्रमन्त्रतंत्राणां उत्कीलनमंत्र स्तोत्रस्य मूल प्रकृतिऋषिर्जगतीच्छन्दः, निरंजनो देवता क्लीं बीजं ह्रीं शक्तिः, ह्रः लौं कीलकं सप्त-कोटिमन्त्रयन्त्रतन्त्रकीलकानां संजीवन सिध्यर्थे जपे विनियोगः।

अब निम्न मन्त्रों का क्रमशः उच्चारण करते हुए अपने दाहिने हाथ की उंगलियों का स्पर्श एक-एक ढेरी पर करें, इस प्रकार यह पीठ पूजा सम्पन्न करनी है।

ॐ मण्डूकाय नमः। ॐ कालाग्निरुद्राय नमः। ॐ मूलप्रकृत्यै नमः। ॐ आधारशक्त्यै नमः। ॐ कूर्माय नमः। ॐ अनन्ताय नमः। ॐ वाराहाय नमः। ॐ पृथिव्यै नमः। ॐ सुधाम्बुधये नमः। ॐ सर्वसागराय नमः। ॐ मणिद्विपाय नमः। ॐ चिन्तामणि गृहाय नमः। ॐ श्मशानाय नमः। ॐ पारिजाताय नमः। ॐ रत्न-वेदिकायै नमः। ॐ मणिपीठाय नमः। ॐ नानामुनिभ्यो नमः। ॐ शिवेभ्यो नमः। ॐ शिवमुण्डेभ्यो नमः। ॐ बहुमांसास्थिमोदमानशिवाभ्यो नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ बहुमांसास्थिमोदमानशिवेभ्यो नमः। ॐ धर्माय नमः। ॐ ज्ञानाय नमः। ॐ वैराग्नाय नमः। ॐ ऐश्वर्याय नमः। ॐ अधर्माय नमः। ॐ अज्ञानाय नमः। ॐ अवराज्ञानाय नमः। ॐ अनैश्वर्याय नमः। ॐ आनन्दकन्दाय नमः। ॐ सर्वतत्वात्मपद्माय नमः। ॐ प्रकृतिमयपत्रेभ्यो नमः। ॐ विकारमयकेसरेभ्यो नमः। ॐ पंचाशद्वर्णढयकर्णिकायै नमः। ॐ अर्कमण्डलाय नमः। ॐ सोममण्डलाय नमः। ॐ महीमण्डलाय नमः। ॐ सत्वाय नमः। ॐ रजसे नमः। ॐ तमसे नमः। ॐ आत्मने नमः। ॐ अन्तरात्मने नमः। ॐ परमात्मने नमः। ॐ ज्ञानात्मने नमः। ॐ क्रियायै नमः। ॐ आनन्दायै नमः। ॐ ऐं पारयै नमः। ॐ परा-परायै नमः। ॐ निस्धानाय नमः। ॐ महारुद्र भैरवाय नमः॥

अब साधक शिव का ध्यान कर आगे लिखे विधान से मूल मन्त्र का जप प्रारम्भ कर श्री त्रिपुर स्तोत्र का पाठ करें।

मूल मन्त्र

ॐ ह्रों ह्रीं ह्रीं षट्पंचाक्षराणामुत्कीलय उत्कीलय स्वाहा। ॐ जूं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्राणां संजीवनं कुरु कुरु स्वाहा॥

ॐ ह्रीं जूं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं वं भं मं यं रं लं वं शं पं सं हं लं क्षं मात्राक्षराणां सर्वम् उत्कीलनं कुरु स्वाहा। ॐ सोऽहं (११ बार)। ॐ जूं सौं हं हंसः ॐ (११ बार)। हं जूं हं सं गं (११ बार)। सोऽहं हं सो यं (११ बार)। लं (११) यं (११)। ॐ ह्रीं जूं सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रस्तोत्रकवचादीनां संजीवनं संजीवनं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ सोऽहं हं सः जूं संजीवनं स्वाहा॥

इस पूरे मन्त्र का १०८ बार शान्त भाव से मुट्ठी बन्द कर उच्चारण करना है, इस पूरे कार्यक्रम के दौरान धूप, अवश्य जलते रहना चाहिए।

कुछ विशेष शास्त्रों के अनुसार इस प्रयोग में यदि त्रिपुर स्तोत्र का पाठ किया जाय तो फल प्राप्ति सहज ही प्राप्त होती है।

(शेष भाग पृष्ठ संख्या ३९ पर देखें)

रोग निवारण-रक्षा-शक्ति का चमत्कारिक स्तोत्र

श्रीमार्कण्डेयकृतं स्तोत्रम्

नित्य एक पाठ करें

रत्सानुशरासनं रजताद्रिश्रृंगनिकेतनं शिजिनीकृतपन्नगेश्वरमच्युतानलयाकम् ।
क्षिप्रदग्धपुरत्रयं त्रिदशालयैरभिवन्दितं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।

पंच पादपपुष्पगन्धिपदाम्बुजद्वयशोभियं भाललोचनजातपावकदग्धमन्मथविग्रहम् ।
भस्मदिग्धकलेवरं भवनाशिनं भवभव्ययं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।

मत्तवारणमुख्यचर्मकृतोत्तरीयमनोहरं पंकजासनपद्मलोचनपूजितङ्घ्रिसरोरुहम् ।
देवसिद्धतरंगिणीकरसिक्तशीतजाधरं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।

कुण्डलीकृतकुण्डलीश्वरकुण्डलं वृषवाहनं नारदादिमुनीश्वरस्तुतवैभवं भुवनेश्वरम् ।
अन्धकान्तकमाश्रितामरपादपं शमनान्तकं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।

यक्षराजसख भगाक्षिहरं भुजंगविभूषणं शैलराजसुतापरिष्कृतचारुवामकलेवरम् ।
क्ष्वेडनीलगलंपरश्वधधारिणं मगधारिण चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।

भेषजंभवरोगिणामखिलापदामपहारिणं दक्षयज्ञविनाशिनं त्रिगुणात्मकं शिवलोचनम् ।
भुक्तिमुक्तिफलप्रदं निखिलाघसंबिर्हणं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।

भक्तवत्सलमर्चतां निधिमक्षयं हरिदम्बरं सर्वभूतपतिं परात्परमप्रमेयमनूपमम् ।
भूमिवारिनभोहुताशनसोमपालितस्वाकृतिं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।

विश्वसृष्टिविधायिनं पुनरेव पालनतत्परं संहरन्तमयं प्रपंचमशेषलोकनिवासिनम् ।
क्रीडयन्तमहर्निशं गणनाथयूथसमावृतं चन्द्रशेखरमाश्रये मम किं करिष्यति वै यमः ।।

रुद्रं पशूपतिंस्थाणुं नीलकण्ठमुमापतिम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
कालकंठं कालमूर्ति कालाग्निं कालनाशनम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
नीलकण्ठं विरुपाक्षं निर्मलं निरुपद्रवम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
वामदेवं महादेवं लोकनाथं जगद्गुरुम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
देवदेवं जगन्नाथं देवेशवृषभध्वजम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
अनन्तभव्ययं शान्तमक्षमालाधरं हरम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
आनन्दं परमं नित्यं कैवल्यदकारणम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥
स्वर्गापवर्गदातारं सृष्टिस्थित्यकारिणम्। नमामि शिरसा देवं किं नो मृत्युः करिष्यति ॥

॥ इति श्रीमार्कण्डेयकृतं स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥

(पृष्ठ संख्या ३७ का शेष भाभ)

श्री त्रिपुर स्तोत्र

ॐ ॐ प्रणवरूपाय अं आं परमरूपिणे
इं ईं शक्तिस्वरूपाय उं ऊं तेजोमयाय च ॥१॥
ऋं ॠं रंजितदीप्ताय लृं लॄं स्थूलस्वरूपिणे।
एं ऐं वाचां विलासाय ओं औं अं अः शिवाय च ॥२॥
कं खं कमलनेत्राय गं घं गरुणगामिने।
ङं चं श्रीचन्द्रलाभाय छं जं जयकराय ते ॥३॥
झं ञं टं ठं जयकर्त्रे डं ढं णं तं पराय च।
थं दं धं नं नमस्तस्मै पं फं यन्त्रभयाय च ॥४॥
बं भं मं बलवीर्याय यं रं लं यशसे नमः।
वं शं षं बहुवादाय सं हं लं क्षं स्वरूपिणे ॥५॥
दिशामादित्यरूपाय तेजसे रूपधारिणे
अनन्ताय अनन्ताय नमस्तस्मै नमो नमः ॥६॥
मातृकायाः प्रकाशायै तुभ्यं तस्मै नमो नमः।
प्राणशायै क्षीणदायै संजीवन नमो नमः ॥७॥
निरंजनस्य देवस्य नामकर्म विधानतः।
त्वया ध्यातं च शक्त्या च तेन संजायते जगत् ॥८॥
स्तुताहमचिरं ध्यात्वा मायाया ध्वंसहेतवे।
संतुष्टा भार्गवायाहं यशस्वी जायते हि सा ॥९॥

ब्रह्माणं चेतयन्ती विविधसुरनरांस्तर्पयन्ती प्रमोदाद्-
ध्यानेनोद्दीपयन्ती निगमजपमनुं षट्पद प्रेरयन्ती।
सर्वान् देवान् जयन्ती दितिसुतदमनो साप्यहंकार मूर्ति-
तुभ्यस्तस्मै च जाप्यं स्मररचितमनुं मोचशापजालात् ।१०।
इदं श्रीत्रिपुरास्तोत्रं पठेद् भक्त्यातु यो नरः।
सर्वान् कामान्वाप्नोति सर्वशापाद् विमुच्यते ॥११॥

॥ इति सर्वमन्त्रयन्त्रतन्त्रोत्कीलन सम्पूर्णम् ॥

इस स्तोत्र का पांच बार पाठ प्रतिदिन करना है, सात दिन तक यह विधान इसी रूप में सम्पन्न कर शिव यन्त्र को छोड़ कर अन्य सामग्री पूजा में काम आये लाल कपड़े में ही बांध कर उसमें ग्यारह लोहे की कीलें मिला कर घर से बाहर जमीन में गड्ढा खोद कर गाड़ देना आवश्यक है

यह प्रयोग अपने आप में अत्यन्त सिद्ध प्रयोग है और कितना ही भयंकर तन्त्रिक प्रयोग किया हुआ हो वह दूर हो जाता है। तथा साधक जिस मन्त्र की भी साधना करता है उसमें सिद्धि अवश्य प्राप्त होती है।

सामग्री, जो आपकी साधनाओं में सहायक हैं

साधना प्रयोग	पृष्ठ संख्या	सामग्री नाम	न्यौछावर
पंचक के दो प्रयोग-नृसिंह प्रयोग	कवर पेज	नृसिंह यन्त्र	१५०)रु०
		२१ गोमती चक्र	६३)रु०
-भूतसिद्धि प्रयोग	,,	तीन सियारसिंगी	१८०)रु०
		एक शूकरदन्त	१२०)रु०
श्रीगुरुचरण कमलेभ्यो नमः	५	चांदी की चरण पादुका	१२०)रु०
		गुरु यन्त्र चित्र	१५०)रु०
		स्फटिक माला	७०)रु०
स्वर्णाकर्षण गुटिका प्रयोग	६	स्वर्णाकर्षण गुटिका	११०)रु०
		मूंगा माला	८०)रु०
		हकीक माला	११०)रु०
		कमलगट्टा माला	७२)रु०
जीवन साफल्य सिद्धि प्रयोग	१७	—	—
—सरस्वती सिद्धि साधना	१८	सरस्वती यन्त्र	१५०)रु०
—त्र्यम्बक प्रयोग	१९	महामृत्युंजय यन्त्र	१७२)रु०
		रुद्राक्ष माला	२१०)रु०
महात्रिपुर सुन्दरी साधना	२१	नौ विशिष्ट यन्त्र	१८०)रु०
		मनोहारी माला	१८०)रु०
ग्रह दोष बाधा निवारण	२५	नवग्रह कवच यन्त्र	१५०)रु०
		सिद्ध नवग्रह तांत्रोक्त माला	२२१)रु०
श्री विष्णु साधना	२९	विष्णु महा यन्त्र	२००)रु०
		विष्णु कमल बीज	१०१)रु०
		वैजयन्ती माला	२०१)रु०
तन्त्र उत्कीलन प्रयोग	३५	रौद्र शिव महाकाल यन्त्र	१२०)रु०
		तांत्रोक्त उत्कीलन यन्त्र	१४०)रु०
		५१ तांत्रोक्त फल	२५५)रु०

जैसे ही मन्त्र अनुष्ठान पूर्ण हो जाय सिद्ध गोमती चक्र तथा अन्य सामग्री सुपारी इत्यादि सहित उसी लाल कपड़े में बांध कर शत्रु के घर की दिशा में डाल कर आ जांय, कितना भी भयंकर शत्रु हो, उसे आपके सम्मुख झुकना पड़ता है और सात दिन के भीतर-भीतर बाधा से मुक्ति प्राप्त होती है । ★

भूत सिद्धि साधना

महापंचकों में भूत-प्रेत सिद्धि से सम्बन्धित साधना प्रयोग अवश्य करना चाहिए, क्योंकि इस समय इसके विचरण की गति विशेष होती है, ४ दिन के इस प्रयोग को रात्रि में ही सम्पन्न करना चाहिए ।

साधक स्नान कर तहमत की तरह एक धोती कमर के नीचे बांध लें जिस प्रकार से मुसलमान तहमत बांधते हैं उसी प्रकार से धोती को बांधें अर्थात् पीछे लांग न लगाएं और फिर जिस प्रकार मुसलमान नमाज पढ़ते समय बैठते हैं उसी प्रकार से साधक दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाँय, सामने एक स्टील की थाली रखकर इसे पूरी तरह काजल से रंग दें । फिर किसी तिनके की सहायता से उस थाली में पुरुष की आकृति बनावें और उस आकृति के सिर पर सियारसिंगी तथा दोनों पैरों पर भी एक-एक सियारसिंगी रखें, इस प्रकार इस प्रयोग में **तीन सियारसिंगी** का प्रयोग होता है । उस आकृति के मध्य में या सीने पर एक **शूकरदन्त** रख दें फिर इसके सामने तीन तेल के दीपक लगावें और उसी प्रकार बैठे-बैठे रुद्राक्ष माला से मन्त्र जप करें—

भूत सिद्धि मन्त्र

।। ॐ भ्रं भ्रूं भूतनाथाय फट् ।।

इस रात्रि को २१ माला मन्त्र जप करने का विधान है, जब मन्त्र जप पूरा हो जाय तो सामने पुरुष की आकृति दिखाई देगी जो सामान्य मनुष्य की तरह होगी, उससे भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है, साधक मन्त्र जप पूरा होने पर उससे प्रश्न पूछे कि तुम्हारा नाम क्या है, तब वह अपना नाम बतायेगा ।

फिर साधक उसके ऊपर जल छिड़कता हुआ कहे कि तू मेरे वश में रहेगा और मैं अपने जीवन में जब भी तुम्हारा नाम लेकर मन्त्र पढ़ कर आवाज दूं तब तुम आओगे और मेरा बताया हुआ कार्य करोगे ।

ऐसा होने के बाद जब भूत अदृश्य हो जाय तब थाली में रखी हुई तीनों सियारसिंगी तथा शूकरदन्त एक लाल पोटली में बांध दें और उसे अपने घर में रख दें या जमीन में गाड़ दें, घर में रखने पर भी किसी प्रकार का कोई दोष नहीं है ।

इसके बाद जब भी उस भूत को उसका नाम बोल कर ११ बार उपरोक्त मन्त्र का उच्चारण करेंगे तो वह भूत अदृश्य रूप में साधक के सामने होगा, साधक उसे देख सकेगा, लेकिन पास में बैठे हुए अन्य लोग उसे नहीं देख सकेंगे ।

तब साधक मन ही मन अथवा धीरे से जो भी आज्ञा देगा, वह भूत अवश्य ही उस कार्य को सम्पन्न करेगा । ●

रजि० नं० : ३५३०५/८१ पोस्टल एल०आर०जे० : ३६६७/८६-८७

देहि मे सौभाग्यमारोग्यं देहि मे परमं सुखम् !

हे मां भगवती जगदम्बे ! आप मुझे सौभाग्य और आरोग्य दो तथा परम सुख प्रदान करो।

चैत्र नवरात्रि सिद्धि महोत्सव (४-४-९२ से १०-४-९२ तक)

- पूज्य गुरुदेव की वाणी से गुंजायमान हुआ था गुरुधाम, गुरु शक्ति पीठ का एक-एक कण।
- साधकों ने सीधे हृदय में उतारा शक्ति का वो आह्वान जो चैतन्य कर गया उनके रोम-रोम को।
- देवी के एक रूप में ही अनेकों स्वरूप की अनोखी अद्भुत साधनाएं।
- चैतन्य दीक्षा मन्त्रों से गूंजती वाणी में शिष्य और गुरु का एक नवीन सम्बन्ध, नवीन धरातल पर।

केवल यही नहीं बहुत कुछ हुआ, ये क्षण सम्पत्ति बन गये साधकों की।

- दोष निवृत्ति का सर्वमंगला अनुष्ठान।
- प्राण शक्ति चैतन्य महागौरी दुर्गा साधना।
- भगवत्पाद सच्चिदानन्द दर्शन सिद्धाश्रम प्रवेश दीक्षा।
- आकस्मिक धन प्राप्ति प्रयोग।
- आत्म चैतन्य दीक्षा।
- जीवन सिद्धि साधना।
- एक-एक साधना का विस्तार से वर्णन—गुरुवाणी से चैतन्य-महा मन्त्रों से आपूरित।
- पूरा सिद्धि महोत्सव समेटा गया है इन नौ ऑडियो कैसेटों में।

सिद्धि महोत्सव महाकल्प ऑडियो कैसेट सेट

- जो शिविर में आये, जो नहीं आये सभी को आवश्यक।
- गूंजेगी जब यह गुरुवाणी रस बरसेगा जब गुरु प्रसाद का।
- चैतन्य होगा रोम-रोम आनन्द होगा साधना सिद्धि का।
- एक बार सुनेंगे तो आत्मा में पुकार उठेगी बार-बार सुनने की।

प्रति कैसेट—२४)रु०, पूरा सेट—२१६)रु०। (केवल पत्रिका सदस्यों के लिए)।

सम्पर्क : मन्त्र-तन्त्र-यन्त्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली मार्ग, हाईकोर्ट कालोनी जोधपुर-३४२००१ (राज०)